(आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : ग्रन्थांक-36)

विमर्श स्वरांजलि

(गुरु भक्ति में समर्पित उपयोगी भजन संग्रह)

संचय

बा.ब्र. विशु दीदी

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच प्रकाशन

मंगलं भगवान् अर्हन्, मंगलं वृषभो जिनः।
मंगलं पूज्यपादार्यो, जिनागम पंथोस्तु तं।।

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : हिन्दी ग्रंथांक–36

कृति	: विमर्श स्वरांजलि
प्रेरणा	: आर्यिका विद्यान्तश्री माताजी आर्यिका विमलांतश्री माताजी
संचय	: बा.ब्र. विशु दीदी
प्रकाशक	: राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)
संस्करण	: प्रथम 2018, छिंदवाड़ा
मुद्रक	: ज्योति ग्राफिक्स 744, गोदिको का रास्ता, किशनपोल, जयपुर मो.: 8290526049, 8619727900

समर्पण की सौरभ

यूँ तो संगीत कला एक अनादि विद्या है लेकिन जब इस भरत क्षेत्र में कर्मयुग का आरंभ हुआ तब कर्मप्रणाली से जीवनयापन की विधियों से अनभिज्ञ मनुष्यों को प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने 72 कलाओं का निर्देश दिया। जिसमें संगीत विद्या से जुड़ी हुई अनेक कलायें भी उनके द्वारा प्रतिपादित की गईं, जैसे गीत कला, वादित्र कला, पुष्करगत कला, स्वरगत कला, समताल कला आदि। अत: कहा जा सकता है, प्रशस्त संगीत आत्मशान्ति का प्रबल निमित्त है। जहाँ संसार में रागी जीव रागवर्धक गीतों के माध्यम से मनोरंजन कर आत्ममलिनता को प्राप्त होते हैं। वहीं सच्चे परमात्म भक्ति से भरे हुये देव–शास्त्र–गुरु के उपासक प्रभु की भक्ति में अनेक भजनों की रचनाकर या अन्य द्वारा रचित भजनों को श्रद्धापूर्वक गुनगुनाकर, मनोभंजन कर आत्म निर्मलता का पावन पुरुषार्थ करते हैं।

गुरुभक्ति में गहन आस्थाभिषिक्त सुभक्तों के लिये यह ''विमर्श स्वरांजलि'' एक अनूठा उपहार है इस कृति में गुरु भक्ति से प्रेरित हो हमने परम पूज्य अहार जी के छोटे बाबा, आदर्श महाकवि, राष्ट्रयोगी, भावलिंगी संत श्रमणाचार्य गुरुदेव श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज के प्रति अनेक शिष्यों, भक्तों, कवियों एवं गायकों द्वारा भक्ति से सृजित लगभग शताधिक भजनों में से कुछ संकलन किया गया है।

अनेक प्रकार की मनमोहक धुनों में सृजित इन भजनों के शब्द शब्द में श्रद्धा, भक्ति और समर्पण की महक है जो हमें सभी प्रकार के तनावों से दूर कर सहज ही गुरु भक्ति से जोड़ देते हैं।

यद्यपि भावलिंगी संत पूज्य गुरुदेव का सुरोपासित महिमाशाली व्यक्तित्व, हम अल्पज्ञों के द्वारा शब्दायित करने योग्य नहीं है, तथापि ये भजनों का समूह जो गुरु चरणों में समर्पित किया जा रहा है वो मात्र सूर्य की उपासना में दीप जलाने जैसा है तो आइये हम और आप मिलकर सच्चे भावलिंगी संत की इन भजनों के माध्यम से गुणाराधन कर कर्मक्षय का पुरुषार्थ करें। ये कृति पाठकों के कल्याण का हेतु बने ऐसी सुविमल भावना के साथ समर्पित।

गुरु चरणानुरागी
बा.ब्र. विशु दीदी (संघस्थ)

परिचय की वीथिकाओं में

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	:	**श्री राकेश कुमार जैन**
पिता	:	श्री सनत कुमार जैन
माता	:	श्रीमती भगवती जैन
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनि	:	दो – कमला, प्रियंका
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता–दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री– श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणाभाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।
परमार्थ यात्रा	:	आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन (सन्–1995, स्थान–मोराजी सागर, म.प्र.)
त्याग के संस्कार	:	आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलू प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत :

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा :

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान–ललितपुर क्षेत्रपाल जी, 3 अगस्त सन्–1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा :

फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी, 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा :

पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर, 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित :

आचार्यश्री विरागसागरजी ने 2005 को कुन्थुगिरी पर गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छि के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार :

मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067 रविवार दिनांक 12 दिसम्बर, 2010 को बांसवाड़ा, राजस्थान में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

साहित्यिक यात्रा :

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज यूँ तो शरीर से दुबले-पतले लेकिन गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य, प्रवचन, पाठ संग्रह–

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. गूँगी चीख (प्रवचन)
3. शंका की एक रात (प्रवचन)
4. मानतुंग के मोती
5. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
6. गीताञ्जलि (भजन)
7. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
8. जीवन है पानी की बूँद (भाग-1)
9. जीवन है पानी की बूँद (भाग-2)
10. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
11. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
12. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
13. समर्पण के स्वर (काव्य)
14. आईना (काव्य)
15. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
16. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
17. वाह क्या खूब कही (काव्य)
18. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
19. आओ सीखें जिनस्तोत्र
20. जनवरी विमर्श
21. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
22. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
23. भरत जी घर में वैरागी
24. शब्द शब्द अमृत

गज़ल संग्रह :

ज़ाहिद की ग़जलें

विधान :

- आचार्य विरागसागर विधान
- एकीभाव विधान
- श्री भक्तामर विधान (3)
- विषापहार विधान
- श्री कल्याण मंदिर विधान
- श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका : योगसार प्राभृत (प्राकृत/हिन्दी) : विमर्शोदया / अप्पोदया

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभु स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-मुनि विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय – राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण प्रकाशन
प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (बडा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. सम सामयिक राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)

संस्कार यात्रा :

ऐतिहासिक पूजन प्रशिक्षण शिविर—आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित पूजन प्रशिक्षण शिविर एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुडे हैं। अभी तक 20 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं—

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलौनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोक नगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. विजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
20. जबलपुर (म.प्र.)
21. छिंदवाड़ा (म.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस-सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक रथ महोत्सव-2004 (बूँदी-राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव-2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2018 (धनौरा, म.प्र.)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर-1996
2. भिण्ड (म.प्र.)-1997
3. भिण्ड (म.प्र.) -1998
4. भिण्ड (म.प्र.)-1999
5. महरौनी (उ.प्र.)-2000
6. अंकुर कॉलोनी (सागर)-2001
7. सतना (म.प्र.) -2002
8. अशोकनगर (म.प्र.)-2003
9. रामगंजमण्डी (राज.)-2004
10. सिंगोली (नीमच)-2005
11. कोटा (राज.)-2006
12. शिवपुरी (म.प्र.) -2007
13. आगरा (उ.प्र.)-2008
14. एटा (उ.प्र.)-2009
15. डूंगरपुर (राज.) -2010
16. अशोकनगर (म.प्र.)-2011
17. विजयनगर (राज.)-2012
18. भिण्ड (म.प्र.)- 2013
19. बड़ौत (उ.प्र.)- 2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.)-2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)-2016
22. जबलपुर (म.प्र.)-2017
23. छिंदवाडा (म.प्र.)-2018

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्या देखने-सुनने को मिलती है। कम-बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में

सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी आचार्यश्री पंथ-संत जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करने वाले **आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देने वाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है।** आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री ही अलग पहिचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

—श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

पूज्य गुरूदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवनी साहित्य :

1. राष्ट्रयोगी : लेखक - श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. आँगन की तुलसी : लेखक - प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. जतारा का ध्रुवतारा : लेखक : श्री कपूर चंद जैन 'बंसल' जतारा (म.प्र.)
4. भावलिंगी संत (महाकाव्य) : लेखक - श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. विमर्श धाम (महाकाव्य) : लेखक - पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
6. सर्वोदयी संत (महाकाव्य) : लेखक - श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ' सागर (म.प्र.)
7. विमर्श महाभाष्य : लेखक - पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. विमर्श वाटिका : लेखक - श्री कपूर चंद जैन 'बंसल' जतारा (म.प्र.)
9. विमर्श भक्ति शतक : लेखका - श्रीमती स्मृति जैन 'भारत' अशोक नगर (म.प्र.)
10. विमर्श शतक 1, 2 : लेखक - पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
11. विमर्श वंदना : लेखक - कवि शशिकर 'खटका' राजस्थानी, विजयनगर (राज.)

विधान :

1. आचार्य विमर्शसागर विधान : लेखक - श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. संकट मोचन तारणहारे-गुरु विमर्श विधान : लेखक - पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (विजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ोत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016, स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक)
प्रधान संपादक-डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत)
संपादिका-डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर)
प्रबंध संपादक-डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा)
संपादक-पं. सर्वेश शास्त्री

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे-ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-2 कब क्या घट जाये रे ऽऽ
साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा
ख्वाबों में तू क्यों, हो-हो-2, आनन्द मनाये रे ऽऽ

अर्द्धमृतक समवृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न-सिकुड़न
गोदी में पोता-पोती, खोज रहा बचपन यौवन
बीते जीवन के, हो-हो-2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी
बेटा बहु सोचें, हो हो-2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी-बेटा है
चिल्लाता है पानी दो, पास न बेटी-बेटा है
भूखा प्यास ही, हो-हो-2 इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरघट में, पुण्य-पाप की करवट में
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में
तेरा ही बेटा, हो-हो-2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है
तेरा ही बेटा, हो-हो-2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गंवाता है
देहरी से बाहर, हो-हो-2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

कर तू प्रभु का ध्यान

रचियता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज

कर तू प्रभु का ध्यान बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान-बाबा, निज घट में भगवान॥
काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह, पल भर में मिल जायेगा।
खुद को तू पहिचान-बाबा खुद को तू पहिचान॥१॥

धन-वैभव यह महल-खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, सांझ समय मुरझायेगा।
कर ले धर्मध्यान, बाबा, कर ले धर्मध्यान॥२॥

कभी किसी का दिल दुःख जायें, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मल्हम बन जायें, ऐसे बोल बड़े अनमोल।
कहलाता यह ज्ञान, बाबा, कहलाता यह ज्ञान॥३॥

माता-पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्तव्य कहा।
पाओगे सम्मान, बाबा पाओगे सम्मान॥४॥

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।
हो सम्यक् श्रद्धान, बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान॥५॥

राग-द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा।
गंवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा।
क्यों बनता नादान, बाबा क्यों बनता नादान॥६॥

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी ना वह अपना।
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना॥
क्यों तू करे गुमान, बाबा, क्यों तू करे गुमान॥७॥

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मर कर देव हुआ तत्काल।
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल।
मिट जाये अज्ञान, बाबा मिट जाये अज्ञान॥८॥

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

गुरुदेव मेरे आप बस इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए॥

साचूँ सदा अपना सुहित नहिं काम क्रोध विकार हो
हे नाथ ! गुरु आदेश का पालन सदा स्वीकार हो
सिर पर मेरे आशीष का शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव....

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ नित बह्मचर्य लखूँ सदा
सीता सुदर्शन सम बनूं निज आत्मसौख्य चखूँ सदा
माता सुता बहिना पिता दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव.....

सच्चा समर्पण भाव हो नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो
विश्वासघात ना हम करें हर श्वांस में सौगंध हो
हे नाथ ! गुरु विश्वास की डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव.....

जागे न मन में वासना मन में कषायें न जगें
हो वात्सल्य हृदय सदा कर्त्तव्य से न कभी डिगें
गुरुभक्ति की सरिता बहे निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव.....

भावों में निश्छलता रहे छल की रहे न भावना
गुरु पादमूल शरण मिले करते हैं हम नित कामना
जिनधर्म जिन आज्ञा सुगुरु सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव.....

उपकार जो मुझ पर किये गुरुवर भुला न पायेंगे
जब तक है तन में श्वाँस हम उपकार गुरु के गायेंगे
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव.....

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से सुरभित रहे मम साधना
आचार की मर्यादा ही हे नाथ ! हो आराधना
स्वर-स्वर समाधिभाव का चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव...

श्री शान्तिनाथ कीर्तन

रचियता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज

जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, भगवन्-२
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, शान्ति भगवन्।

हम आये हैं-द्वार तुम्हारे-२,
दे दो प्रभु जी, हमको सहारे-२
शान्तिनाथ भगवन्-भगवन्-भगवन्ऽऽ
जय हो.....
छवि वीतरागी-प्यारी प्यारी लागे-२
दरश जो पाया-धन्य भाग जागे-२
चरणों करुँ नमन-नमन-नमनऽऽ
जय हो.....
सर्वज्ञ स्वामी-शरण में आया-२,
कहीं न मिला जो-वह सुख पाया-२
हर्षित हुए नयन-नयन-नयनऽऽ
जय हो.....
हित उपदेशी-आप कहाते-२
हम गुण गाने - भक्त बन जाते-२
छोड़ूँ न अब चरण-चरण-चरण
जय हो.....
आहार जी के-बाबा कहाते-२
यक्ष यक्षिणी भी-सिर को नवाते-२
झुकते हैं मुनिगण-मुनिगण-मुनिगणऽऽ
जय हो.....
दुखिया हो कोई-द्वार पे आये-२
हँसता हुआ ही-द्वार से जाये-२
श्रद्धा हो पावन-पावन-पावनऽऽ

जय हो, जय हो, जय हो।

जानें क्या है जिनागम पंथ?

-भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

'जिनागम पंथ' अनादि-अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत,केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य-उपाध्याय-निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत जिनागम, और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है। और जिनागम में कथित श्रमण-श्रावकधर्म यह पंथ अर्थात् मार्ग है। जो श्रमण-श्रावकधर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है। जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो! विदेह क्षेत्र में विराजित, विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं! वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात् जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग–द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागम पंथो, रागो–दोसो य णासगो सेयो।
पंथो तेरह – बीसो, रागादि – वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करने वाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरह पंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ाने वाला है, अकल्याणकारी है।

अहो! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरह पंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर रागद्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति–पूजा–लाभ के लिए नये–नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान् अहित किया है।

अहो! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं। और कल्पित पंथों का पोषणकर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह–बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में राग–द्वेष का कारण बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह–बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री–प्रेम–वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी जिनागम में श्रद्धा रखें, और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के रागद्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

'जयदु जिणागम पंथो।'
'जिनागम पंथ जयवंत हो।'

भजन-1

जिनागम पंथ

हर इक जुबाँ पे अब जिनागम पंथ हो सदा
जयवंत हो जयवंत हो जयवंत हो सदा
जागो जागो जैनियो.....2

अरिहंत ने बस एक मोक्ष मार्ग कहा था
हर काल में अनादि से जीवंत रहा था
अरिहंत के उस पंथ पे अब आँच आई है
अब जैन एकता भी जिससे लड़खड़ाई है
अब हम सभी का एकमात्र मंत्र हो सदा
हर इक जुबाँ.....
जयवंत हो.....
जागो जागो जैनियो.....2

अज्ञानियों के बुद्धिजाल की विचित्रता
पंथों में बाँट दी समाज की पवित्रता
जिस थाल में खाया उसी में छेद किया है
जिनवाणी को पढ़ पढ़ के उसमें भेद किया है
इन सब कुरीतियों का शीघ्र अंत हो सदा
हर इक जुबाँ.....
जयवंत हो.....
जागो जागो जैनियो.....2

कुछ जातियों में बँट गये कुछ पंथों में बँटे
कतिपय जो शेष थे वो आज संतों में बँटे
अब छोड़ दो अपनों के लिये विष परोसना
इक दूसरे की पूजा पद्धति को कोसना
अब प्रेम का वात्सल्य का बसंत हो सदा
हर इक जुबाँ.....
जयवंत हो.....
जागो जागो जैनियो.....2

आचार्यों ने जिस पंथ की महिमा बताई है
उपकृत हुये देवों ने जिसकी दी दुहाई है
जिनवाणी माँ की पीड़ा हृदय में समाई है
अब भावलिंगी संत ने अलख जगाई है
आराध्य सबके ऐसे ही निर्ग्रंथ हों सदा
हर इक जुबाँ.....
जयवंत हो.....
जागो जागो जैनियो.....2

भजन-2

तर्ज-मेरे रश्के कमर

भावलिंगी गुरु, हे विमर्श गुरु,
आप चौके में आये मजा आ गया।
भावलिंगी गुरु.....-2
भावलिंगी गुरु, मेरे सच्चे गुरु
आज चौके में आये मजा आ गया-2
अपने पावन चरण रख के मेरे आँगन
भाग्य मेरे जगाये मजा आ गया । भावलिंगी....

चंदना की तरह भक्त कितने खड़े,
वीर जैसे गुरु आयें द्वारे मेरे-2
मिल गई जब विधि, मेरे हाथों में ही-2
गुरुवर मुस्कुराये मजा आ गया । भावलिंगी....

नवधा भक्ति से गुरु का पड़गाहन किया,
मन वचन काय शुद्धि उच्चारण किया-2
ऊँचे आसन बिठा, पूजन थाली सजा-2
पग गुरु के धुलाये मजा आ गया । भावलिंगी....

जोड़कर हाथ गुरुवर को वंदन किया
और विनयवत् गुरु को निवेदन किया-2
मन में श्रद्धा लिये, पूरे परिवार ने-2
जब अहार कराये, मजा आ गया। भावलिंगी....

हुये निर्विघ्न आहार गुरुदेव के
भक्त जयकार गुरुवर की करने लगे-2
आरती के दीये, अपने हाथों लिये-2
गुण गुरुवर के गाये मजा आ गया। भावलिंगी....

भजन-3

तर्ज-प्रेम रतन धन पायो...

गुरु ब्रह्मः गुरुर्विष्णू गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु र्साक्षात् परम ब्रह्मः तस्मै श्री गुरवे नमः।।

नि नि सा सा रे रे सा सा सा सा सा
नि नि सा सा रे रे सा सा सा सा सा
नि नि सा सा रे रे सा सा सा
नि नि रे...

आयो... आयो... आयो... आयो...
आयो... आयो... आयो...

बाजे चहुँ ओर जी, आज शहनाईयाँ...
बाजे चहुँ ओर जी, आज शहनाईयाँ।
भक्त गा रहे गुरु की, जन्म की बधाईयाँ
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे-ऽऽऽ
विमर्श उत्सव आयो... आयो
विमर्श उत्सव आयो... आयो
आज मन हर्षायो-ऽऽऽ
ये उत्सव...
विमर्श उत्सव आयो... आयो...
विमर्श उत्सव आयो।

नगर जतारा, की धरती पर, गुरु ने जन्म लिया-ऽऽऽ
मात भगवती, पितु श्री सनत जी, दोउ को धन्य किया-ऽऽऽ
मन को प्रसन्न किया-ऽऽऽ
यश ने छुई जिनकी, नभ की ऊँचाईयाँ,
भक्त गा रहे गुरू की, जन्म की बधाईयाँ,
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे-ऽऽऽ
विमर्श उत्सव आयो... आयो
विमर्श उत्सव आयो... आयो
आज मन हर्षायो-ऽऽऽ
ये उत्सव...
विमर्श उत्सव आयो... आयो
विमर्श उत्सव आयो।

जन्म जयंति, पर गुरुवर की, सबका हृदय गाये-ऽऽऽ
भावलिंगी गुरु, उमर तुम्हें हम, भक्तों की लग जाये-ऽऽऽ
हर दिल यही चाहे-ओ ओ...
घुंघरु बजा रहीं, चलती पुरवाईयाँ,
भक्त गा रहे, गुरु की जन्म की बधाईयाँ,
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे
आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे आयो रे-ऽऽऽ
विमर्श उत्सव आयो... आयो
विमर्श उत्सव आयो... आयो
आज मन हर्षायो-ऽऽऽ
ये उत्सव...
विमर्श उत्सव आयो... आयो
विमर्श उत्सव आयो।

भजन-4

तर्ज - प्यार मिल जाये पिया का

वंदना गाऊँ गुरु की, वंदना गाऊँ, गुरु की वंदना गाऊँ
मन के मंदिर में, गुरु की मूरत बैठाऊँ, गुरु की मूरत बैठाऊँ
गुरुवर विमर्श प्यारे, संकट मोचन तारण हारे
रात दिन ध्याऊँ गुरु को, रात दिन ध्याऊँ-2
भव से तर जाऊँ, गुरु से ऐसा वर पाऊँ-2

प्रार्थना मेरी यही है प्रार्थना मेरी, यही है प्रार्थना मेरी,
हमपे हे गुरुवर कृपा की, छाँव हो तेरी, कृपा की छाँव हो तेरी
हर पल साथ हो तेरा, सर पे गुरु हाथ हो तेरा,
बस यही चाहूँ-2
भक्ति कर पाऊँ गुरु की भक्ति कर पाऊँ
हृदय से भक्ति कर पाऊँ

मन में श्रद्धा का हमेशा दीप हो रोशन, हमेशा दीप हो रोशन
छाँव में बीते गुरु की ये मेरा जीवन
छाँव में बीते ये जीवन
मन में भावना है, मेरी कामना है
पूरी कर पाऊँ-2
धन्य हो जाऊँ गुरु की, जो शरण पाऊँ-गुरु की जो शरण पाऊँ

वंदना गाऊँ गुरु की, वंदना गाऊँ, गुरु की वंदन गाऊँ।
मन के मंदिर में, गुरु की मूरत बैठाऊँ, गुरु की मूरत बैठाऊँ
गुरु की वंदना गाऊँ, गुरु की मूरत बैठाऊँ-2
गुरु की वंदना गाऊँ...

भजन-5

तर्ज - आवारा हवा का झोंका हूँ

वो बड़े नसीबों...2 वो बड़े नसीबों वाले हैं
जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-3
वो बड़े नसीबों वाले हैं-4
जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-3
वो बड़े नसीबों वाले हैं
जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-2
दरबार ये अतिशय
दरबार ये अतिशयकारी है-sss
आकर अहार जी देखो जरा
वो बड़े नसीबों वाले हैं, जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-2

प्रभु शांतिनाथ का धाम है-sss
प्रभु शांतिनाथ का धाम है-sss
पावन बुंदेली धरती पर-3
प्रभु शांतिनाथ का धाम है ये,
पावन बुंदेली धरती पर-2
ऐसी है प्रभु की
ऐसी है प्रभु की मूरतिया-sss
ज्यों मुकुट में कोहिनूर जड़ा
वो बड़े नसीबों वाले हैं, जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-2

है नैसर्गिक सौंदर्य यहाँ-ऽऽऽ
है नैसर्गिक सौंदर्य यहाँ-ऽऽऽ
आध्यात्मिक शुचिता कण-कण में-3
है नैसर्गिक सौंदर्य यहाँ-
आध्यात्मिक शुचिता कण-कण में-2
रँगे से चाँदी,
रँगे से चाँदी करने का-ऽऽऽ
हमने है सुना इतिहास जहाँ
वो बड़े नसीबों वाले हैं, जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-2

हर मनोकामना पढ़ लेते-ऽऽऽ
हर मनोकामना पढ़ लेते-ऽऽऽ
प्रभु हर इक आने वाले की-3
हर मनोकामना पढ़ लेते,
प्रभु हर इक आने वाले की-2
जो सबको असंभव
जो सबको असंभव लगता है-ऽऽऽ
संभव होता वो काम यहाँ
वो बड़े नसीबों वाले हैं, जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-2

गुरुवर विमर्श की भक्ति ने-ऽऽऽ
गुरुवर विमर्श की भक्ति ने-ऽऽऽ
यहाँ अतिशय एक दिखाया था-3
गुरुवर विमर्श की भक्ति ने,
यहाँ अतिशय एक दिखाया था-2

दीदी को जीवन
दीदी को जीवनदान दिया-ऽऽऽ
सुनकर प्रभु ने गुरुवर की सदा
वो बड़े नसीबों वाले हैं, जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-2

प्रभु शांतिनाथ बड़े बाबा-ऽऽऽ
प्रभु शांतिनाथ बड़े बाबा-ऽऽऽ
गुरुवर विमर्श छोटे बाबा-3
प्रभु शांतिनाथ बड़े बाबा
गुरुवर विमर्श छोटे बाबा-2
हो सच्चे संत,
हो सच्चे संत भावलिंगी-ऽऽऽ
यक्षों ने जय-जयकार किया
वो बड़े नसीबों वाले हैं, जिन पर है बड़े बाबा की कृपा-4

भजन-6

तर्ज - नफरत की दुनियाँ

हे भावलिंगी...ऽऽ, हे संत तपस्वी, धरती के भगवान
हे भावलिंगी संत तपस्वी, गुरु विमर्श सागर, धरती के भगवान-2
भक्तों के मन मंदिर में बसी गुरुदेव, छवि तेरी.....
लगे महावीर समान
धरती के भगवान.....

1. निर्दोष चर्या का, करे रात दिवस पालन-2
जीवन्त मूलाचार, गुरुदेव का जीवन
गुरु राग-द्वेष से पूर्ण मुक्त हो, निज में ही डूबे,
करते हो आतम ध्यान
हे भावलिंगी संत तपस्वी गुरु विमर्शसागर,
धरती के भगवान...-2

2. हो तपन ग्रीष्म की आग, जाड़ों की चुभन आये
परिषह कोई तुमको, विचलित ना कर पाये
बिन साधनों के साधना में, लीन रहते गुरुवर
पाने को शिवधाम
हे भावलिंगी...

3. रत्नत्रय की आभा, मुख चन्द्र पर चमके-2
तप कर हुई कुन्दन, काया सदा दमके
ये शब्द छन्द ये गीत हुये सामर्थ्य हीन गुरुवर
करने तेरा गुणगान
हे भावलिंगी...
भक्तों के मन...
धरती के भगवान-3

भजन-7

तर्ज - बाजे बाजे रे शहनाई

जब से आये हो नगरी में छाया आनंद हर्ष अपार-2
भावलिंगी गुरुवर विमर्श तुमको, वंदन शत-शत बार-2
जगमग दीप जले खुशियों के झूमे नाचे रे नरनार-2
भावलिंगी गुरुवर.....2

1. कितने दिनों से मन में थी अभिलाषा-2
नगरी हमारी गुरुवर करें चौमासा-2
गुरुवर के आने से हर दिन हमको लागे रे त्यौहार-2
भावलिंगी गुरुवर.....2

2. जन्मों के जोड़े मानों पुण्य काम आये-2
नियति ने मानो सोये भाग्य हैं जगाये
जिनके दर्शनों को तरसे सारा ये जमाना
हुआ ऐसे पूज्य गुरु का नगर में आना-2
दोनों हाथों से लुटाते भक्तों पर जो अपना प्यार-2
भावलिंगी गुरुवर.....2

3. वर्षायोग में नित बरसे धर्म का सावन-2
रौनक अनोखी छाई हर घर आँगन-2
हर कोने में गूँज रही है बस गुरुवर की जयजयकार-2
भावलिंगी गुरुवर.....2

भजन-8

तर्ज - ओ कान्हा अब तो मुरली की

हे गुरुवर विमर्श सागर जी, दो चरणों में स्थान-2
तुमही मुनिवर, तुमही गणधर-2
तुमही मेरे भगवान, दो चरणों में स्थान
हे गुरुवर.....
देव शास्त्र गुरुओं की सेवा, पग-पग करती जाऊँ
समभावी रहकर सुख-दुःख में, हर कर्त्तव्य निभाऊँ
बनके रहूँ गुरु, तेरी शरण में-2
धर्मवान संतान, दो चरणों में स्थान
हे गुरुवर .....
राग-द्वेष के बंधन तोड़ूँ, समता भाव जगाऊँ
सद्गुण संस्कारों की पूँजी, गुरुवर तुमसे पाऊँ
हे धरती के देव दिगम्बर-2
कर दो मेरा कल्याण, दो चरणों में स्थान
हे गुरुवर.....
भावलिंगी हे संत तपस्वी, अनुपम तेरी वाणी
शब्द-शब्द अक्षर-अक्षर से, छलके बस जिनवाणी
अन्तरमन को रोशन कर दे-2
दो हमको वो ज्ञान, दो चरणों में स्थान
हे गुरुवर.....
तुमही मुनिवर.....
हो गुरुवर, दो चरणों में स्थान।

भजन-9

तर्ज - देखा एक ख़्वाब तो ये

जब से दिल ने की है गुरु बंदगी तेरी
हर कदम सँवर रही है जिंदगी मेरी
जब से.....
हर कदम.....
गुरु विमर्श हो गयी जो आपकी कृपा
मुझे गले लगा रही है हर खुशी मेरी
जब से दिल.....
हर कदम.....

जिसने दुनिया में जो भी पाया है, वो मुक़द्दर से अपने पाया है-2
मैं कहूँ क्या कि मुक़द्दर भी ये अपना, मैंने गुरुवर के दर से पाया है
दूर हो गई हर इक बेबसी मेरी
हर कदम.....
जब से दिल.....
हर कदम.....

नाता गुरु तुमसे कभी टूटे ना, साथ गुरुवर तुम्हारा छूटे ना-2
रूठ जाये चाहे मुझसे सारा जहाँ, पर गुरु आप मुझसे रूठें ना
तुमसे ही दुनियाँ में हुई रोशनी मेरी
हर कदम.....
जब से दिल.....
हर कदम.....

मुझे ऐसे तेरा सहारा मिला, डूबती नाव को किनारा मिला-2
काम बिगड़े हुये सँवरने लगे, जबसे गुरु आपका इशारा मिला।
पूरी हो रही हैं सारी ख़्वाहिशें मेरी
हर कदम.....
जब से दिल.....
हर कदम.....
गुरु विमर्श हो गई.....
जब से दिल.....
हर कदम.....
जब से दिल.....
हर कदम.....

भजन-10

तर्ज - भगत के वश में भगवान

बन्धुओ!

भक्ति संसार सागर से पार करने का एकमात्र सशक्त साधन है। भक्ति से लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन के सम्पूर्ण सुख मानव को प्राप्त होते हैं। इतिहास में भक्ति की शक्ति एवं चमत्कारों के अनगिनत कथानक विद्यमान हैं और इस पंचमकाल में भी गुरु एवं प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति एवं अकम्प श्रद्धा से होने वाले चमत्कारों की अनेक घटनायें हमारे समक्ष हैं। प्रस्तुत काव्य कथानक में 25 दिसम्बर 2015 को सिद्धक्षेत्र अहार जी में घटित एक ऐसी ही सत्य घटना का वर्णन है, जिसमें एक भक्त की अपने गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा एवं भक्ति ने महान चमत्कारों की परिणति की।

भगत की पीर हरें भगवान-4
कहें विमर्श गुरु सच्चे भक्त का-2
रखते हैं प्रभु जी ध्यान
भगत की पीर.....4

भक्ति में अद्भुत शक्ति, बात ये है जग जानी
इसी का जो प्रमाण दे, सुनो ये सत्य कहानी-2
शिष्या गुरुवर विमर्श की, थी संघस्थ आँचल दीदी
गुरु आज्ञा में रहती, बहुत ही सरल और सीधी-2
अटल हिमालय जैसा उनका-2
गुरु के प्रति श्रद्धान
भगत की पीर.....4

प.पूज्य श्रमणाचार्य भावलिंगी संत श्री विमर्शसागर जी मुनिराज की संघस्थ शिष्या बा.ब्र. आँचल दीदी मोक्षमार्ग की साधना कर रहीं थीं। धर्म के प्रति उनकी आस्था, गुरु के प्रति अटूट विश्वास पूर्ण संघ में विशिष्ट पहचान रखता था। गुरु सेवा में दिन रात रमी आँचल दीदी सदैव गुरु के अहार, स्वाध्याय, विहार आदि में तीनों योगों से अनुरक्त रहतीं अपना कल्याण मार्ग प्रशस्त कर रहीं थीं। किन्तु काल चक्र के दुष्ट प्रभाव से 10 दिसम्बर 2015 के दिन-

जतारा नगर में एक दिन, एक दुर्योग घटा रे
बिगड़ गया स्वास्थ्य अचानक, जाने क्या रोग हुआ रे-2
गिर गई धरा पे दीदी, पैर निश्चेत हुये थे
हाथ बेजान हो चले, संचलन हीन हुये थे-2
किया परीक्षण डाक्टर ने-2
हर जाँच दिखी सामान्य
भगत की पीर.....4

इस प्रकार अचानक दीदी का स्वास्थ्य बिगड़ जाने से सम्पूर्ण जैन समाज एवं आचार्य गुरुदेव ससंघ गहन चिन्ता में पड़ गये। स्थानीय डॉक्टर एवं वैद्यों ने निरीक्षण कर कोई संतोष जनक उत्तर नहीं दिया। तब सहस्र भक्त उन्हें महानगर की ओर बड़े विशेषज्ञ डॉक्टरों के पास ले जाने लगे और उनके समस्त परीक्षण कराये गये। लेकिन

बात कुछ समझ ना आये, कैसा ये रोग है हाय
आ गई मुख पे विकृति, दीदी कुछ बोल ना पाये-2
नगर के महानगर के, वैद्य डॉक्टर को दिखाया

किन्तु उपचार कोई भी, किसी की समझ ना आया-2
देख के लक्षण डॉक्टर भी सब-2
होने लगे हैरान
भगत की पीर.....4

दिल्ली महानगर के सबसे बड़े रुग्णालय में दीदी को उपचार हेतु ले जाया गया किन्तु वहाँ भी कोई सफलता हाथ नहीं लगी। स्वास्थ्य की ऐसी प्रतिकूलता में भी दीदी क्षणमात्र भी अपने आराध्य गुरुवर विमर्शसागर जी का स्मरण करना नहीं भूलीं। बल्कि एक अन्तर्राष्ट्रीय अस्पताल में भी उन्होंने अपने गुरु का चित्र स्थापित कराया।

इशारों में दीदी ने, कहा डॉक्टर को बुलाकर
मेरा उपचार कर सकेंगे, मात्र गुरु विमर्श सागर-2
पहले जय विमर्श बोलो, तभी उपचार में लूँगी
रहूंगी अस्पताल में गर, चित्र गुरु का देखूँगी-2
जय विमर्श बोले सब डॉक्टर-2
लेके गुरु का नाम
भगत की पीर.....4

लाख प्रयासों के बाद जब डॉक्टरों का समूह कोई उपचार नहीं कर सका तब दीदी ने भरोसा जताया कि मेरा उपचार मात्र मेरे गुरुदेव ही कर सकते हैं। डॉक्टर्स कहते कि दीदी के समस्त निरीक्षण और जाँचें सामान्य हैं, किसी रोग की पुष्टि नहीं हो रही, फिर भी उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं आ रहा, इसका कारण ज्ञात नहीं है। तब भक्त समूह दीदी को पुनः गुरुवर विमर्श सागर जी के शरण में ले गये, जहाँ गुरुदेव अपने गुरुवर गणाचार्य श्री सूरिगच्छाचार्य

विरागसागर जी के साथ ससंघ मंगल मिलन करने वाले थे। स्थान था सिद्धक्षेत्र अहार जी एवं दिन था 23 दिसम्बर 2015।

युक्ति कोई काम ना आयी, स्वास्थ्य नित गिरता जाये
भक्त दीदी को लेकर, तब गुरु चरण में आये-2
करने जा रहे थे गुरुवर, अहार जी क्षेत्र के दर्शन
देख दयनीय दशा को, हुआ विकलित गुरु का मन-2
गणाचार्य गुरु विराग ने भी-2
किया आशीष प्रदान
भगत की पीर हरें.....4

दीदी की दयनीय दशा देख आचार्य श्री का अन्तस्मन उद्विग्न हो उठा। हँसतीं मुस्कुरातीं सदैव गुरु आज्ञा में तत्पर दीदी को बेबस, लाचार, चेतना शून्य देख गुरुदेव का हृदय विचलित हो उठा। दीदी आशीर्वाद ग्रहण करने के लिये व्हील चेयर पर गुरुदेव के समक्ष उपस्थित हुईं और गुरुदेव आशीष देने हेतु अनायास कहने लगे-बेटा मैं शांति भक्ति का उच्चारण करता हूँ तुम श्रद्धा पूर्वक इसका श्रवण करो...

बैठ दीदी के सन्मुख, ध्यान गुरुवर ने लगाया
पाठ कर शांति भक्ति का, बड़े बाबा को ध्याया-2
हुआ तब अतिशय भारी, चेतना ऐसी आयी
नैनों की खोई रोशनी, पुनः दीदी ने पायी-2
पुलकित हो गुरु दर्शन करके-2
करने लगीं प्रणाम
भगत की पीर.....4

अहो! अभी गुरुदेव ने शांति भक्ति के कुछ छन्द ही पढ़े थे कि अचानक दीदी की आँखों में रोशनी आने लगी और प्रसन्नता के अतिरेक में वे कहने लगीं गुरुदेव! गुरुदेव! मैं आपको देख सकती हूँ मेरी आँखे ठीक हो गईं गुरुदेव! गुरुदेव शान्त चित्त रहते हुये मुस्कुराये एवं यथावत् शांति भक्ति उच्चारण करते रहे।

पाठ गुरु शांति भक्ति का, ज्यों ज्यों तब करते जाते
बड़े बाबा अहार के, कृपा अपनी बरसाते-2
दूर हुई मुख की विकृति, बोल होठों पर आये
हाथ दीदी ने जोड़े, देख मुनिगण हर्षाये-2
करते रहे प्रभु शांतिनाथ की-2
भक्ति गुरु अविराम
भगत की पीर.....4

अरे! यह क्या... दीदी की मुख की विकृति स्वयं ठीक होने लगी। हाथों में संचलन होने लगा। मुख से शब्द प्रस्फुटित होने लगे। हे गुरुदेव! हे गुरुदेव! मेरा मुख ठीक हो गया। मैं बोल सकती हूँ। मेरे हाथ... मेरे हाथों में चैतन्यता आ गई गुरुदेव! दीदी की प्रसन्नता का कोई ठिकाना ना था। शान्तिनाथ भगवान गुरुदेव के माध्यम से जो चमत्कार कर रहे थे उसे देख संघस्थ त्यागियों का रोम-रोम पुलकित हो रहा था। सहसा दीदी बोली। गुरुदेव! यदि मेरे पैर ठीक हो जाये तो मैं आपको अहार दे सकूँगी बहुत दिनों से मैंने आपको आहार नहीं दिया और फिर...

एक बिजली सी कौंधी, पैर में जाके समाई
उठ खड़ी हुईं वो दीदी, बैठ कुर्सी पे जो आयीं-2

देके प्रभु की परिक्रमा, झुक गयी गुरु चरणों में
देखा साक्षात् ये अतिशय, वहाँ शतकों नयनों ने-2
कष्ट मुक्त कर शांतिनाथ ने-2
कीनी शांति प्रदान
भगत की पीर.....4

कुर्सी छोड़ अचानक खड़ी हुई दीदी मानो किसी हर्ष विभोर मयूर की तरह नृत्य करने को आतुर थीं। कमरे में अपने गुरु के चारों और परिक्रमा करते हुये दीदी इस कदर आनंदित हो रहीं थीं मानो पाषाण की अहिल्या का श्रीराम ने उद्धार कर नव-जीवन प्रदान किया हो। फिर आँचल दीदी को लेकर गुरुदेव विमर्शसागर जी ससंघ शांतिनाथ भगवान के समक्ष जिनालय में गये। वहाँ भक्ति दर्शन आदि कर संघ को आशीर्वाद दिया और दीदी को साथ ले ससंघ गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी के पास लाये। गुरुवर ने भी यह अतिशय देख अति प्रसन्न हो मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। शांतिनाथ भगवान का यह साक्षात् अतिशय देख वहाँ उपस्थित हजारों भक्तों के समूह से 'संकट मोचन तारण हारे, गुरु विमर्श की जय जय जय' ऐसे जयकार के उच्च स्वर गुंजायमान होने लगे।

गूँजे गुरुवर विमर्श के, गगनभेदी जयकारे
सुखद आश्चर्य में डूबे, वहाँ पर भक्त थे सारे-2
दीदी आँचल ने गुरु से, नया जीवन था पाया
छोटे बाबा अहार के, कह के भक्तों ने बुलाया-2
संकट मोचन तारण हारे-2
गुरु विमर्श को प्रणाम
भगत की पीर.....4

भजन-11

गुरु विमर्श का साथ है, डरने की क्या बात है-2
सदा सफलता साथ हमारे-2 सिर पे गुरु का हाथ है
गुरु विमर्श.....2
समय से पहले, भाग्य से ज्यादा, बोलो किसने पाया है
तेरा था जो, तुझे मिला है, गुरु विमर्श की छाया है
समय से.....
तेरा था.....
गुरु का संग दिन रात है, डरने की क्या बात है-2

गुरु के नाम से, कितनों के ही, बिगड़े काम तो बन जाते
जिसकी याद से, जनम जनम के, कष्ट सभी तो मिट जाते
गुरु के.....
जिसकी याद.....
ज्ञान की बरसात है, डरने की क्या बात है
गुरु का संग दिन रात है, डरने की क्या बात है

सभ्यता संस्कृति, तुमसे सुशोभित, विमर्शसागर गुरु नमन
धरती अम्बर, तुमको निहारे, दूर से छूये तेरे चरण
सभ्यता संस्कृति.....
धरती अम्बर.....
रोज ही मुलाकात है डरने, की क्या बात है
गुरु का संग दिन रात है, डरने की क्या बात है

सदा सफलता साथ हमारे-2 सिर पे गुरु का हाथ है।
गुरु विमर्श.....4

भजन-12

आचार्य विमर्शसागर -4
जब से आये बहार आई
आचार्य.....जब से.....
देखो काँटे भी हो गये फूल-2
चले चन्दन सी पुरवाई
देखों काँटे.....
चले चन्दन.....
आचार्य.....जब से.....2

भेदज्ञान की बगिया सजी है,महावीर सी वाणी मिली है।
आचार्य विमर्श को पाकर, मेरे जीवन की बगिया खिली है।
भेदज्ञान.....
आचार्य.....
मेरे सिर पे पिछी लगाई-2
जब से.....
आचार्य विमर्श.....
जब से.....

आत्मअनुभूति रस चख रहे हो, मुझे तीर्थंकर से लग रहे हो
छाया मिल जाये गुरुवर तुम्हारी, निज में निज को ही तुम लख रहे हो
आत्म.....
छाया.....
शांति भक्ति की सिद्धि पाई-2

जब से.....
आचार्य विमर्श.....
जब से.....

तुमको यक्षों ने गुरुवर निहारा, संत भावलिंगी कहके पुकारा
छोटे बाबा अहार जी के तुम, जय हो-जय हो का गूँज रहा नारा
तुमको.....
छोटे बाबा.....
भक्त नन्द ने महिमा गाई-2
जब से.....
आचार्य विमर्श.....
जब से.....
आचार्य.....4
जब से.....
आचार्य.....
जब से.....5

भजन-13

अरे हो-ऽ
अँगना पधारो छोटे बाबा, मोरे अहार जी वाले-4
भाग्य सँवारो छोटे बाबा जी-2
भाग्य सँवारो छोटे बाबा, मोरे अहार जी वाले
अँगना पधारो छोटे बाबा-3

द्वारे-द्वारे पे चौक पुराये-2
अत्रो-2 कहके पड़गाहे-2
हमको निहारो छोटे बाबा
मोरे अहार.....
अंगना पधारो.....-3

ऊँचे आसन पे गुरु को बिठाये-2
सोने के कलशा से चरण धुलाये-2
चंदन सम तारो छोटे बाबा
मोरे अहार.....
अँगना पधारो.....3

नौधा भक्ति सें आहार कराये-2
चाँदी की थाली में दीपक जलाये-2
आरती उतारो छोटे बाबा.....
मोरे अहार.....-3

अँगना पधारो.....
भावलिंगी संत विमर्शसागर-2
हाथों में पीछी दी श्रावकों ने लाकर-2
भव से निकारो छोटे बाबा
मोरे अहार.....
अँगना पधारो.....3

संकट मोचन तारण हारे-2
नन्द करे गुरु के जयकारे-2
नैया उबारो छोटे बाबा
मोरे अहार.....
अँगना पधारो.....3
अरे हो ऽ
अंगना पधारो.....6

भजन-14

एक नजर-2
पूज्य आचार्य श्री एक नजर-एक नजर
पूज्य आचार्य श्री-2 एक नजर-2

दयालु मेरे ये गुरुवर विमर्शसागर हैं-2
बड़े कृपालु हैं, करुणा के आप सागर हैं-2
सुखी होना हैं, जो प्राणी तो इधर, आजा इधर
पूज्य आचार्य.....2

पूज्य आचार्य.....2
सुबह और शाम श्रद्धा से तुम्हें ध्याया है-2
तुम तो समदर्शी हो गुरु तेरा दर्श पाया है-2
सहते परीषह सदा चलते हो गुरु काँटों की तुम डगर-डगर
पूज्य आचार्य.....2

पूज्य आचार्य.....2
भक्तों के गुरु विमर्श आप ही सहारे हो-2
रहते संसार में पर सारे जग से न्यारे हो-2
तेरी वाणी का अब तो होने लगा मुझ पे असर-मुझ पे असर
पूज्य आचार्य.....2

पूज्य आचार्य.....2
भक्तों की विनती सुनो गुरु करो एक नजर-2
आत्म अनुभूति का रस पीते और पिलाते हो-2
भेद विज्ञान की बगिया सदा महकाते हो-2
प्रवचन गूँज रहे आपके गुरु गाँव-गाँव, शहर-शहर
पूज्य आचार्य.....2

पूज्य आचार्य.....2
भक्तों की विनती सुनो गुरु करो एक नजर-2
एक मुस्कान सारे पापों को हर लेती है-2
सूने जीवन को ये खुशियों से भर देती है-2
हमको चौमासा मिला धन्य हुआ मेरा नगर-मेरा नगर
पूज्य आचार्य.....2
दयालु मेरे.....
बड़े कृपालु.....
सुखी होना.....
पूज्य आचार्य.....4

भजन-15

नील गगन भी गुरुवर, देखो करता है मनुहार-2
अहार जी के छोटे बाबा, की महिमा अपरम्पार-2
आचार्य विमर्शसागर ने, त्यागा है सब संसार-2
चर्या को देख तुम्हारी, देवता भी करें जयकार-2

हर दिन त्यौहार सा लगता,
जहाँ गुरुवर तुम आ जाते-2
भक्तों को सब कुछ मिलता,
जब कृपाशीष बरसाते-2
इस पंचम काल में पाया-2 भावलिंगी का दर्श अपार
आहार.....2

संयम की परिभाषा तुम,
निर्ग्रंथों का मार्ग बताते-2
सब चलो-चलो इस पथ पर,
प्रेरित करते समझाते-2
बड़े बाबा अहार जी वाले-2 बरसाते तुम पे प्यार
चर्या को.....
आहार.....

भावों की गंगा बहती,
भावलिंगी गुरु दर्श पाके-2
श्रद्धा नतमस्तक होती,
तेरी उज्ज्वल देशना पाके-2
वाणी में जिनवाणी का, बतलाते गुरुवर सार
आहार.....2
नीलगगन भी.....2
अहार जी.....4

भजन-16

तर्ज - गरबा

हाँ गुरु विमर्श सागर श्रद्धा से चरणों में आया-2
भावलिंगी संत के महाभाग्य से दर्शन पाया-2
चरणों में गुरुवर मुझे अच्छा लगता-2
दरबार तेरा मुझे सच्चा लगता-2
गुरुवर की पायी है छाया
गुरु विमर्श सागर.....
भावलिंगी संत के महाभाग्य.....

जय हो जय विमर्श सागर, हुये धन्य गुरुवर को पाकर-2
मेरे गुरुवर हैं भगवान जैसे, मुझे लगते चारों धाम जैसे-2
मेरे जीवन को तुमने सँवारा, प्रतिपल मैंने तुमको पुकारा-2
चरणों में गुरुवर, मुझे अच्छा लगता
दरबार तेरा.....2
गुरुवर की पायी.....
गुरु विमर्श.....
भावलिंगी.....
जय हो जय..... हुये धन्य.....2

तुमसे निर्ग्रंथ पथ है सुशोभित, चर्या देख के हुये भक्त मोहित-2
धन्य गुरुवर तुम्हारा समर्पण, इसलिये मेरा जीवन है अर्पण-2
चरणों में..... दरबार तेरा.....2
गुरुवर की .....
गुरु विमर्श.....
भावलिंगी.....
जय हो जय..... हुये धन्य.....2

जब से गुरु चरणों को धुलाया, उसी दिन से चमत्कार पाया-2
मिली ईश्वर की मुझको छाया, लगा सिद्ध शिला में मैं आया-2
चरणों में.....दरबार तेरा.....2
गुरुवर की पायी.....
गुरु विमर्श.....
भावलिंगी.....
जय हो जय..... हुये धन्य.....4

भजन-17

तर्ज - दीवाने है दीवानों को नजर...

तेरे चरणों में है गुरुवर, थोड़ी सी जगह मिल जाये
मेरा सूना सा ये जीवन, तुम्हें पाकर के खिल जाये

मेरे छोटे बाबा कृपा कीजिये, कृपा कीजिये
मेरे सिर पे पीछी लगा दीजिये, लगा दीजिये
हे आचार्य गुरुवर विमर्श सागर, विमर्शसागर
शरण आये मुझको शरण दीजिये, शरण दीजिये
मेरे छोटे.....
मेरे सिर.....

मेरे देवता तुम निहारो जरा, निहारो जरा
मेरी जिंदगी को सँवारों जरा, सँवारो जरा
चरण धूलि मिल जाये मुझको जरा-2
तो चंदन भी बन जाये सोना खरा
मेरा सारा अज्ञान हर लीजिए, हाँ हर लीजिए
शरण आये.....
मेरे छोटे.....
मेरे सिर.....

2. अँधेरा है मंजिल बहुत दूर है, बहुत दूर है
तेरे चेहरे पे मंत्रों का नूर है, हाँ नूर है
मेरी जिंदगी को सहारा मिला-2
मेरी उजड़ी बगिया में फूल खिला
मेरा सोया भाग्य जगा दीजिये, जगा दीजिये
शरण आये.....
मेरे छोटे.....
मेरे सिर पे.....

3 मेरी भावनाओं के विश्वास हो, हाँ विश्वास हो।
दया के हे गुरुवर तुम आकाश हो, तुम आकाश हो
मेरी श्रद्धा कहती मेरी साँस हो-2
मेरी भावनाओं के विश्वास हो
मुझे रत्नत्रय की निधि दीजिये, निधि दीजिये
शरण आये.....
मेरे छोटे.....
मेरे सिर पर.....

भजन-18

तर्ज - होली के दिन दिल मिल जाते हैं...

गुरुवर विमर्श का जन्मोत्सव है भक्तों के मन खिल जाते हैं-2
चरणों में आकर के इंसान क्या, पशु भी बैर भुलाते हैं
गुरुवर विमर्श.....2

देखो भगवती माता ने, संस्कार अद्भुत हैं डाले
पिता श्री सनतकुमार ने, जीवन को दिये हैं उजाले
त्याग तपस्या से, जीवन सजाया है
महावीर स्वामी का, पथ अपनाया है
इसलिये जय-जयकार है
वात्सल्य इतना है, आकाश जितना है, भक्त खिंचें चले आते हैं-2

अवतरण का ये त्यौहार, होली और दीवाली सी बहार
नाचे झूमे भक्तों का परिवार, गुरुवर का बड़ा उपकार
आरती उतारे रे, छबि को निहारो रे
भाग्य सँवारो रे, आरती उतारो रे
गुरु मेरे तारण हार हैं
वात्सल्य इतना.....2

चारों दिशायें देखकर, खुश होती है और मुस्कुराती
सात सुरों की सरगम मीठे-2 गीत सुनाती
जन्मोत्सव आया, खुशियाँ है लाया-2
मोहित सारा संसार है
वात्सल्य इतना.....2
चरणों में आकर.....
गुरुवर विमर्श.....4

भजन-19

दीवाना गुरुवर का-2 रटता गुरु का नाम,
करे गुरु का सुमरन-2 नित्य सुबहो शाम,
दीवाना गुरुवर का-2

विमर्श सागर मुनिराई आगम पंथी वैरागी
ज्ञान अर्जन में लीन सतत, मुक्ति पथ के अनुरागी
विमर्श सागर.....
ज्ञान अर्जन.....
जीवन हो धन्य जो भी साँझ-सवेरे करे ऐसे गुरु का गुणगान
दीवाना गुरुवर का-2 रटता गुरु.....
करे गुरु....., नित्य सुबहो.....
दीवाना गुरुवर का-2

रवि सम तेज गुरु के श्रीमुख पर चंद्र सी है शीतलता
ऐसा मनहर रूप देखकर, मन का कमल है खिलता
रवि सम.....
ऐसा मन.....
भावनायें भाये मन गुरु चरणों में ही, जीवन बीते तमाम
दीवाना गुरुवर का-2
रटता गुरु.....
करे गुरु....., नित्य सुबहो.....
दीवाना गुरुवर का-2

माता-पिता, बंधु-सखा, रिश्ते-नाते सब गुरुवर में ही पाये
जीवन को मिली एक नई दिशा, गुरु चरणों में जब से आये
माता.....
जीवन.....
गुरु नाम जपने से व्यथित हृदय ने पाया है आराम
दीवाना गुरुवर का-2
रटता....., करे गुरु.....
नित्य सुबह.....
दीवाना गुरुवर का-4

भजन-20

तर्ज - आओ सुनायें प्रेम की एक कहानी

आओ सुनायें गुरु विमर्श की कहानी
नगर जतारा में थी भगवती रानी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

माँ ने देखे सुपन थे, जन्मे एक कुँअर थे-2
हरने जग की जन्म-मरण की कहानी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

फूलों जैसा सुकोमल, चाँद जैसा वो उज्ज्वल-2
मन हर लेती उसकी प्यारी वाणी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

संस्कारी बड़ा था, जब वो पढ़ने लगा था-2
अव्वल आना ही थी, उसकी निशानी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

गुरु का दर्शन पाया, वात्सल्य ने लुभाया-2
लगने लगी गुरु बिन, दुनिया वीरानी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

गुरु का सान्निध्य पाया, तप का भाव जगाया-2
चलूँगा मुक्ति पथ पर, मन में ठानी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

बहन-भैया पुकारे, तुम हो प्राण हमारे
सब तुम्हारे सहारे, तुमसे अरमाँ हमारे
बहुत कठिन ये डगर न तुमने जानी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

भव-2 की कहानी, मुझको न दोहरानी
कौन किसका यहाँ पे, दुनिया है आनी-जानी
पिता गुरुवर, माँ मेरी जिनवाणी
आओ सुनायें.....
नगर जतारा.....

भजन-21

तर्ज - झूम बराबर, झूम बराबर

अरे तेरे दर्श को रात से दोनों जाग रहीं थी अँखियाँ
ओ बाबा ऽ
आ दर्शन करके धन्य हो गये, महक उठी मन बगिया
ओ बड़े बाबा-ऽ
जय शांती नाथ बड़े बाबा, मन के संताप हरो बाबा
ऐ-ऽ शांती नाथ बड़े.....
मुझे लागी रे लागी रे लगन तेरे चरणों की
ओ मुझे लागी-लागी-लागी-लागी-लागी रे लगन तेरे चरणों की
आरती प्रभु करने से आरत सब टल जायेंगे
तू प्रभु चरणों में आके झूम-3 झूम बराबर-4

हो रात भयानक काली, मत घूम भटक जायेगा
जा-ऽ आजा-ऽ
शांतिनाथ प्रभु का दर्शन, कर रोशन हो जायेगा
आजा-ऽ-2
तू तो पगला ना समझ है जिसको चाहा वो तेरा कब
मुझे लागी रे लागी रे लगन तेरे चरणों की
तू तो.....
मुझे.....
भक्ति में मगन ये मन, मुक्ति गीत गाँयेंगे तो
प्रभु चरणों में आकर झूम-झूम-झूम-झूम बराबर-2

भजन-22

भगवान का आप में दर्श किया
गुरुदेव स्वीकार सहर्ष किया
मुझे आप ही मोक्ष दिलाओगे-2
मन बोला जो मन से विमर्श किया-2

गुरु ज्ञान की हो बरसात-2 आपके वचनों से-
गुरु ज्ञान.....
आपके वचनों से-4
अमृत बरसे दिन रात आपके वचनों से-2
नमो नमो नमो विमर्श मुनि, नमो महाकवि महागुणी -2

सत्य का दर्पण दिखा दिया है नींद से मुझे जगाके
नींद से मुझे जगाके, गुरुवर नींद से मुझे जगाके
हे आचार्य मेरी आँखों में देखा जब मुस्काके
देखा जब मुस्काके, गुरुवर देखा जब मुस्काके
सत्य का दर्पण दिखा दिया है नींद से मुझे जगाके
हे आचार्य मेरी आँखों में देखा जब मुस्काके
मैं समझ गया-ऽ.....
मैं समझ गया हर बात आपके वचनों से
अमृत बरसे दिन रात आपके वचनों से
गुरु ज्ञान की.....2
नमो नमो नमो विमर्श मुनि, नमो महाकवि महागुणी -4

सच कहता हूँ आपसे नाता जोड़ा मैंने जबसे
जोड़ा मैंने जब से, नाता जोड़ा मैंने जबसे
लोभ मोह छल कपट वासना पास ना आये तबसे
पास ना आये तबसे, गुरुवर पास ना आये तबसे
सच कहता हूँ आपसे नाता जोड़ा मैंने जबसे
लोभ मोह छल कपट वासना पास ना आये तबसे
हो शुरु मेरी-ऽ
हो शुरु मेरी हर बात आपके वचनों से
अमृत बरसे दिन रात.....
गुरु ज्ञान की.....2
नमो नमो नमो विमर्श मुनि, नमो महाकवि महागुणी -4

बूँद था मैं पानी की, आपने सागर बना दिया
आपने सागर बना दिया-2
खाली मन को ज्ञान का गुरुवर गागर बना दिया
गागर बना दिया, गुरुवर गागर बना दिया
बूँद था मैं पानी की, आपने सागर बना दिया
खाली मन को ज्ञान का गुरुवर गागर बना दिया
मिलता है-ऽ
मिलता है प्रभु का साथ आपके वचनों से
अमृत बरसे दिन रात आपके वचनों से
गुरु ज्ञान.....2
आपके वचनों से.....2
अमृत बरसे.....2
नमो नमो नमो विमर्श मुनि, नमो महाकवि महागुणी -4

भजन-23

लाखों चाँद खिले हों जैसे, मुख है तुम्हारा शीतल ऐसे,
जाऊँ में बलिहारी
हे विमर्श गुरुराज मैं देखे जाऊँ छबि तुम्हारी-2
मिश्री जैसी मीठ बोली-2 बातें प्यारी-प्यारी
हे विमर्श.....2
हे महाकवि, पावन ये छवि, ओझल ना हो नैनों से कभी-2

मन्द-मन्द मुस्कान तुम्हारी, है गुरुवर पहचान तुम्हारी
हैं गुरुवर पहचान तुम्हारी
नैनों से करुणा रस छलके, मन की मिटा दो तृष्णा सारी
हो-टुक टुक तुम्हें निहार रहे हैं
जग के सब नर नारी
हे विमर्श.....2
हे महाकवि.....2

आपकी संगत संगत रब की, बाकी बातें झूठी सबकी
आपसे मन की बातें जब की, बात समझ आयी मतलब की
आप ये बोले सर पे ना रखना-2
पाप गठरिया भारी
हे विमर्श महाराज.....2
हे महाकवि.....2

धूप जगत है हो तुम छैयाँ, पार करा दो तुम ही नैयाँ
माया के पथ पर फिसले तो आके पकड़लोगे तुम बैंया
आके पकड़ लोगे तुम बैंया
कर दिया मुझे इशारा तुमने-2
तुम हो मेरे हितकारी
हे विमर्श.....
मिश्री जैसी मीठी बोली-2 बातें प्यारी-प्यारी
बातें प्यारी-प्यारी
हे विमर्श.....2
हे महाकवि.....4

भजन-24

हे गुरूवर आप मेरे मोक्ष का आधार हो-2
आप नैया आप सागर-2 आप ही पतवार हो
हे गुरूवर.....2

आपके वचनों ने मेरे मन का दर्पण धो दिया
मन का दर्पण धो दिया
आप जो मेरे हुये तो, मैं को मैंने खो दिया
मैं को मैंने खो दिया
आपके वचनों ने मेरे मन का दर्पण धो दिया
आप जो मेरे हुये तो, मैं को मैंने खो दिया
मैं को मैंने खो दिया
ज्ञान की परिभाषा हो और सच का सच में सार हो
हे गुरूवर आप.....
आप नैया.....
हे गुरूवर.....2

आपके हाथों में मुनिवर अब मेरा ये हाथ है
अब मेरा ये हाथ है
आपकी छाया में मैं हूँ तो दिन से उजली ये रात है
दिन से उजली ये रात है
आपके हाथों में मुनिवर अब मेरा ये हाथ है
आपकी छाया में मैं हूँ तो दिन से उजली ये रात है
दिन से उजली ये रात है

क्यों मेरी इस आत्मा पे वासना का भार हो
हे गुरूवर.....
आप नैया.....
हे गुरूवर .....-2

आपके महाकाव्य का हृदय से जब भी स्पर्श हो
हृदय से जब भी स्पर्श हो
मेरे अन्तरमन से मेरा जब विचार विमर्श हो
जब विचार विमर्श हो
आपके महाकाव्य का हृदय से जब भी स्पर्श हो
मेरे अन्तरमन से मेरा जब विचार विमर्श हो
जब विचार विमर्श हो
आती जाती साँस बोले आप ही उस पार हो
हे गुरूवर .....
आप नैया.....
हे गुरूवर 4

भजन-25

नमो नमो हे विमर्श गुरुवर, नमो नमो हे ज्ञान के तरुवर
नमो नमो हे मुनि करुणाकर, नमो नमो शब्दों के सागर
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

भावलिंगी संत मुनिवर विमर्श सागर जी-2
ज्ञान से भर दो हमारे मन की गागर जी
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

हे महामुनि, हो महागुणी, जग उजागर जी-2
ज्ञान से भर दो.....
नमो नमो हे विमर्श गुरुवर
नमो नमो हे ज्ञान के तरुवर
नमो नमो हे मुनि करुणाकर
नमो नमो शब्दों के सागर
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

ब्रह्मचर्य की शीतल गंगा बहे सदा जीवन में
वास वासना का ना हो इस हृदय के आँगन में
उलझा दे ना तृष्णा मन को विषयों के बंधन में
घोल न दे विष विषधर कोई साँसो के चंदन में
आत्मा जागे तुम्हारे गीत गाकर जी-2

ज्ञान से भर दो....
हे महामुनि, हो महागुणी, जग उजागर जी
ज्ञान से.....
नमो नमो हे विमर्श गुरुवर
नमो नमो हे ज्ञान के तरुवर
नमो नमो हे मुनि करुणाकर
नमो नमो शब्दों के सागर
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

परम पूज्य आचार्य हमें भी चरणों की रज दे दो
दो श्रद्धा विश्वास हमें दीक्षा दो धीरज दे दो
जो जग का कल्याण करे कोई ऐसा कारज दे दो
जय-जिनेन्द्र लिखा है जिस पे हमें भी वो ध्वज दे दो
हम हैं जुगनू जंगलों के तुम दिवाकर जी-2
ज्ञान से भर दो हमारे मन की गागर जी
हे महामुनि, हो महागुणी, जग उजागर जी
ज्ञान से भर दो...
नमो नमो हे विमर्श गुरुवर
नमो नमो हे ज्ञान के तरुवर
नमो नमो हे मुनि करुणाकर
नमो नमो शब्दों के सागर
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

आपकी आज्ञा का पालन पल-2 दिल से कर पायें
लिख लें मन के मनकों पे हम, भजन आप जो गायें
जीवन है पानी की बूँद ये बात ना हम बिसरायें
आपने अपना माना हमको हम ये शुक्र मनायें
आपका आशीष माँगें सर झुकाकर जी-2
ज्ञान से भर दो.....

हे महामुनि, हो महागुणी, जग उजागर जी
ज्ञान से भर दो...
नमो नमो हे विमर्श गुरुवर
नमो नमो हे ज्ञान के तरुवर
नमो नमो हे मुनि करुणाकर
नमो नमो शब्दों के सागर
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

हे महामुनि, हो महागुणी, जग उजागर जी
ज्ञान से भर दो...
नमो नमो हे विमर्श गुरुवर
नमो नमो हे ज्ञान के तरुवर
नमो नमो हे मुनि करुणाकर
नमो नमो शब्दों के सागर
नमो नमो, नमो नमो, नमो नमो

भजन-26

तर्ज - छुप गये सारे नजारे ओये क्या बात

गुरुवर विमर्श सागर तुमसे वर इतना चाहूँ-2
तेरे चरणों में थोड़ा सा स्थान पा जाऊँ-2
लेना मुझे शरण में जब भी दर्शन को आऊँ-2
तेरे चरणों में.....2

गुरुवर ज्ञानी, हो बड़े वरदानी, बिगड़ी बनाते हो पल में-2
मन के दर्पण में जब भी तेरा दर्शन हो
देख तेरी छवि को पुलकित मन हो-S
मन मंदिर में गुरूवर दर्शन तेरा ही पाऊँ-2
तेरे चरणों में.....2

गुरु बाल योगी, हो तुम तप भोगी, मुद्रा प्रशस्त तुम्हारी-2
त्याग तप और संयम में गुरू श्रेष्ठ हो।
अल्प आयु है लेकिन ज्ञान में ज्येष्ठ हो-S
तेरी कृपा हो तो ज्योति ज्ञान की मन में जलाऊँ-2
तेरे चरणों में.....2

करुणा धारी, जगत हितकारी, बड़े ही दयालु हैं गुरुवर-2
प्रेम से हाथ जिनके सिर पे धरते हैं।
दु:ख चिन्ताओं से वो नहीं डरते हैं।
जब तक रहें ये साँसें मैं गुण तेरे ही गाऊँ-2
तेरे चरणों.....2
गुरुवर विमर्श.....2
तेरे चरणों में.....4

भजन-27

गुरुवर विमर्श सागर, तुमको नमन हमारा
शब्दों में क्या बँधेगा, व्यक्तित्व ये तुम्हारा
गुरुवर विमर्श सागर.....
शब्दों में क्या.....
गुरुवर विमर्श सागर

बुन्देलखण्ड की है माटी बड़ी ही पावन,
जन्में जहाँ गुरुवर माँ भगवती के आँगन-2
गर्वित है तुमपे गुरुवर बुन्देलखण्ड सारा
शब्दों में क्या.....
गुरुवर विमर्श सागर

कर आत्मसात आगम अद्भुत सृजन किया है,
शास्त्रों का सार गुरुवर लिखकर सुगम किया है-2
प्रवचन बड़े अनोखे अंदाज भी है न्यारा
शब्दों में क्या.....
गुरुवर विमर्श सागर

बन बाल ब्रह्मचारी लिये संस्कार शिक्षा,
गुरुवर विराग सागर से पाई तुमने दीक्षा-2
वे संत जिनको पूजें भावों से जग ये सारा
शब्दों में क्या.....
गुरुवर विमर्श सागर

भक्तों के मन की शंका पल में गुरू मिटाते,
बच्चे हों चाहे बढ़े सबके हृदय को भाते-2
पाये हैं तुमसे गुरुवर सौभाग्य है हमारा
शब्दों में क्या .....
गुरुवर विमर्श सागर.....
शब्दों में क्या .....
गुरुवर विमर्श सागर.....

भजन-28

विमर्श सागर लागे प्यारा नाम, चरणों में करें हम शत-शत प्रणाम-2
साँझ सबेरे जपें इनका ही नाम, इनके चरण में मिलेंगे चारों धाम
विमर्श.....2

दृढ़ संयम चर्या है कठिन, परीषह सहते रात और दिन-2
प्रभु सुमिरन करें बस आठों याम-2
चरणों में.....
विमर्श सागर ....., चरणों में.....2

आगम पर श्रद्धान करें, भक्तों का कल्याण करें-2
भक्तों की मुश्किल करें आसान-2
चरणों में करें.....
विमर्श सागर ....., चरणों में.....2

गुरुवर करुणाधारी हैं, प्रवचन दे हितकारी हैं-2
देव भी जिनका करें गुणगान-2
चरणों में.....
विमर्श सागर ....., चरणों में.....2

सबकी आँख के तारे हैं, गुरुवर जग से न्यारे हैं-2
साँझ सबेरे जपो इनका ही नाम-2
चरणों में.....
विमर्श सागर ....., चरणों में.....2
साँझ सबेरे....., इनके चरण.....
विमर्श सागर ....., चरणों में.....3

भजन-29

काँटों की डगर-2 चलते हैं गुरुवर,
काँटों की डगर, चलते हैं गुरुवर
धन्य जीवन तुम्हारा है,
हे विमर्श गुरु, तेरा दर्शन मिला,
सौभाग्य हमारा हैऽऽ
काँटों की डगर.....

संयम के हिमालय हो तुम, साधना के शिवालय हो तुम,
साधना के शिवालय हो तुम
निज चेतन में तुम रमते हो ज्ञान वैराग्य के आलय तुम,
ज्ञान वैराग्य के आलय तुम,
जहाँ पड़ते कदम-2 माटी होती चंदन
बहे ज्ञान की धारा है-ऽऽ
हे विमर्श गुरु, तेरा दर्शन मिला,
सौभाग्य हमारा है-ऽऽ
काँटों की डगर.....

भावनाओं के आकाश हो तुम, हर प्राणी के विश्वास हो तुम
हर प्राणी के विश्वास हो तुम
सदा मन्द-मन्द मुस्काते, हर दिल के सदा पास हो तुम
हर दिल के सदा पास हो तुम

हे प्रज्ञा श्रमण! हे प्रज्ञा श्रमण तुम्हें शत्-शत् नमन
मिला तेरा सहारा है
हे विमर्श गुरु, तेरा दर्शन मिला, सौभाग्य हमारा है
काँटों की डगर.....

नगरी में पधारे हो जबसे, त्यौहार सा हर दिन लागे-2
वैरागी के दर्शन पाकर, भाग्य हम सबके गुरुवर जागे-2
चौमासा मिला-2 हुआ सबका भला
सत्संग ये प्यारा हैऽऽ
हे विमर्श गुरु.....
काँटों की डगर.....

भजन-30

हे विमर्श सागर, हे विमर्श गुरुवर, हमें दे दो ज्ञान का दान
भक्तों का करो कल्याण
हे विमर्श गुरु.....
विराग सी छवि, वीतराग के रवि चरणों में झुकें तूफान
भक्तों का करो कल्याण
हे विमर्श सागर.....

चरणों में आ जाओ जी, जीवन सफल बनाओ जी-2
जिनके ग्रन्थ का इक-2 आँखर, है वैराग्य की अमृत गागर
माता भगवती धन्य हैं, जना आपसा लाल-2
गुरु विराग से दीक्षा ले, हो गये आप निहाल-2
आओ चरणों में आओ, मुनिवर के दर्शन पाओ
ये हैं जैनधर्म की शान
भक्तों का करो कल्याण
हे विमर्श सागर.....
चरणों में आ जाओ जी, जीवन सफल बनाओ जी-2

त्याग तपस्या चरण पखारे, गुरु विराग के आप दुलारे
मध्यप्रदेश जतारा में जन्मे गुरु महान-2
कवि हृदय मुनिराज हैं शत-शत बार प्रणाम-2
इनके भजनों में है सार, तत्व का मर्म भरा है अपार

जिन्हें सदा आत्मा का ध्यान
भक्तों का करो कल्याण
हे विमर्श सागर .....
चरणों में आ जाओ जी, जीवन सफल बनाओ जी-2

प्रवचन जिनके अमृत जैसे, ज्ञान सुधारस बरसे जैसे
शून्य सिन्धु और बिन्दु का हुआ है मिलन महान
गुरु विमर्शसागर बने, विराग की पहचान-2
सभ्यता जिनके चरण पखार, संस्कृति करती है मनुहार
हर प्रश्न का हैं जो निदान
भक्तों का करो कल्याण
हे विमर्श.....2
चरणों में आ जाओ जी, जीवन सफल बनाओ जी-5

भजन-31

गुरूवर विमर्श सागर,
मेरा मन पावन कर दो-2
जप तप से हूँ अनजान, महात्यागी तुम हो दिनमान
हृदय मेरा कंचन कर दो
गुरूवर विमर्श सागर.....

सपने ही सपने देखे थे, सपने सजा ना पाये-2
चैन मिला जब इन अँखियों को,
नजर आप ही आये-2
चरणों की दो अब धूल, क्षमा कर दो अब सारी भूल
मेरा मन दर्पण कर दो
गुरूवर विमर्श सागर.....2

सुख में सबने याद किया है, दुःख मैं भूल ही जाते-2
लेकिन फूल की पहरेदारी,
काँटे ही कर पाते-2
तुम दे दो मुझे वरदान, गुरूवर तुम हो मेरे भगवान
माटी चंदन कर दो.....
गुरूवर विमर्श सागर.....2

श्रद्धा और विश्वास जहाँ है, पुलकित मन वहाँ होता-2
विमर्श गुरू के चरणों का जल,
सारे पापों को धोता-2
तुम वीतराग की शान, हो माँ जिनवाणी के तुम प्राण
धन्य मेरा जीवन कर दो.....
गुरूवर विमर्श सागर.....
जप-तप से.....
गुरूवर विमर्श सागर.....
मेरा मन पावन कर दो.....5

भजन-32

पूज्य गुरूवर, विमर्श सागर, संयम के पर्याय हैं।
महावीर का, ले संदेशा, इस धरती पर आये हैं।
पूज्य गुरूवर.....
महावीर का.....
पूज्य गुरूवर.....

टीकमगढ़ के निकट जतारा की भूमि पावन
यहीं भगवती और सनत जी के सुन्दर आँगन
टीकमगढ़ के निकट जतारा की भूमि पावन
यहीं भगवती और सनत जी के सुंदर आँगन
जन्म गुरुवर लिया, धन्य सबको किया
किया धार्मिक संस्कारों के संग में प्रारम्भ अपना जीवन
पूज्य गुरूवर.....
महावीर का.....
पूज्य गुरूवर.....

गुरुवार के दिन जन्में गुरुवर मंगलकारी
बचपन से ही तीव्र विलक्षण प्रतिभा के धारी
गुरुवार के दिन.....
बचपन से ही.....
थे अध्ययन में प्रखर, पायी वाणी मधुर
बड़े कोमल हृदयी बालापन से ही करुणा के धारी
पूज्य गुरुवर.....

जब आचार्य विराग सिन्धु के दर्शन प्राप्त हुए
मानो जन्मों से संचित थे पुण्य जो फलित हुए
जब आचार्य.....
मानो जन्मों.....
मिला वात्सल्य जो, बाल राकेश को
वीतरागी साधु को देख भाव वैराग्य के छलक उठे
पूज्य गुरूवर.....
महावीर का.....
पूज्य गुरूवर.....

पाकर गुरु का साथ चल दिये संयम के पथ पर
शीघ्र ही पाके दीक्षा बने ऐलक विमर्श सागर
पाकर.....
शीघ्र ही.....
त्याग सब कुछ दिया, मुनि पद को लिया
बड़ा ही गर्व हुआ बुन्देलखण्ड को ऐसे हीरे पर
पूज्य गुरूवर.....
महावीर का.....
पूज्य गुरूवर.....

भजन-33

गुरू विमर्श सागर जी कहते जय जिनेन्द्र बोलो
जय-जिनेन्द्र, जय-जिनेन्द्र कहके मौन सभी खोलो,
गुरू.....
जय.....
हृदय में अमृत घोलो, सारे पापों को धोलो-2
गुरू.....
जय.....
हृदय.....2

महाभाग्य से महापुण्य से चौमासा पाया-जय हो
हर दिन ऐसा लगता है त्यौहार नया आया-जय हो
साक्षात लगता है, पाई जिनवर की छाया
हृदय में.....2
गुरू.....
जय.....
हृदय.....2

जीवन शैली और दिनचर्या आपकी न्यारी है-जय हो
भीड़ ये देखो दर्शन करके हर्षित सारी है-जय हो

प्रवचन में जो समझाया है महाउपकारी है
हृदय में.....2
गुरू विमर्श.....
जय-जिनेन्द्र.....
हृदय में.....2

भव से तिर जाने की गुरुवर बात बताते हैं-जय हो
जीवन हमको कैसे जीना कला सिखाते हैं-जय हो
जिनवाणी में छिपे रहस्यों को समझाते हैं
हृदय में 2
गुरू विमर्श.....
जय.....
हृदय.....
गुरू विमर्श....., जय.....2
हृदय.....4

भजन-34

गुरुवर, तेरी वाणी अमृत, झर-झर झरती जाये-2
राह से भूले भटके जन को सच्ची राह दिखाये
गुरूवर तेरी.....
राह से भूले.....
गुरुवर, तेरी वाणी अमृत.....

तेरे ज्ञान और चिन्तन में सागर जैसी गहराई-2
हरपल तेरे अधरों पर जिनवाणी हमने पाई,
तेरी कही हर बात गुरु जीवन का मंत्र बन जाये
गुरूवर तेरी.....
राह से भूले.....
गुरूवर तेरी वाणी अमृत

व्यथित हृदय की पीड़ा हर ले तेरी अनुपम वाणी-2
सुनकर पतित भी पावन हो वाणी तेरी कल्याणी
वेद ग्रंथों का सार प्राणी तेरे प्रवचन में पाये
गुरूवर, तेरी.....
राह से भूले.....
गुरूवर तेरी वाणी अमृत

जिनवाणी जनवाणी बने बस यह उद्देश्य तुम्हारा-2
निज वा पर कल्याण हेतु यह वेष दिगम्बर धारा
वो बड़भागी जो चरणों में आके शीष झुकाये
गुरूवर तेरी.....
राह से भूले.....
गुरूवर, तेरी वाणी अमृत, झर-झर झरती जाये
राह से भूले.....
गुरूवर तेरी वाणी अमृत

भजन-35

गुरु विमर्श सागर की जय, कविवर गुण सागर की जय-2
कवि हृदय.....
कवि हृदय मुनि विमर्श सागर गुण भण्डार-2
बोलो.....-2
बोलो गुरु की जय जयकार.....2
जीवन तो है-ऽऽ
जीवन है पानी की बूँद, इनके ही उद्गार-2
बोलो-ऽऽ
बोलो गुरु की जय जयकार.....
कवि हृदय.....
बोलो-ऽऽ
बोलो गुरु की.....2

भारत भर में गूँज रहा, हर आँगन हर द्वार-2
ओ-ऽ हर आँगन हर द्वार
सुनते गाते हैं सदा, सब श्रावक नर-नार-2
ऐसे अद्भुत-2 भजन के गुरुवर रचनाकार
बोलो-ऽऽ
बोलो गुरु की जय जयकार.....

अष्ट द्रव्य ले आओ, पूजन के थाल सजाओ-2
गुरुवर विमर्श सागर ज्ञानी, पूजन गुरुवर श्री की रचाओ-2
नश्वर जग में झूठ है रिश्ते नाते तमाम-2
हो-ऽ रिश्ते नाते तमाम

अंत समय न आयेगा, कोई किसी के काम-2
किये कर्म ही-2 बनेंगे, तेरी गति के आधार
बोलो-ऽऽ
बोलो गुरु की जय जयकार.....2

जिनकी चिंता में तू जला, सब दिन रैन गँवाये-2
हाँ-ऽ सब दिन रैन गँवाये
अन्त समय तेरी चिता को, वो ही आग लगाये-2
दो शब्दों में-2 ही लिख डाला जीवन का सार
बोलो-ऽऽ
बोलो गुरु की जय जयकार.....2

भजन में गुरुवर ने दिया इक संदेश महान-2
हो-ऽ इक संदेश महान
जीवन है नश्वर सुनो, पानी की बूँद समान-2
देव-शास्त्र-गुरु के-2 सुमरन से होगा बेड़ा पार
बोलो-ऽऽ
बोलो गुरु की जय जयकार.....2
कवि हृदय.....
बोलो-ऽऽ.....
बोलो.....2
जीवन तो है -.....
जीवन है पानी की बूँद.....
बोलो-ऽऽ.....
बोलो गुरु की जय जयकार.....3

भजन-36

मुनि विमर्श सागर जी पधारे अभिनंदन-अभिनंदन-2
भक्तों की श्रद्धा स्वीकारो शत-शत बार है वंदन-2
हे करुणाकर, ज्ञान दिवाकर, भगवती माँ के नंदन, हे नंदन
मुनि विमर्श.....

जन्म स्थान है ग्राम जतारा, बड़ा ही प्यारा-प्यारा
हे गुरूवर बड़ा ही प्यारा
सनत कुमार पिता के सूरज किया तुमने उजियारा
हे गुरूवर किया तुमने उजियारा
हे करुणाकर, ज्ञान दिवाकर, मेंटो मन का क्रंदन, हे क्रंदन
मुनि विमर्श.....2

गुरु विराग सागर के ज्ञानी शिष्य आप कहलाते
हे गुरूवर शिष्य आप कहलाते
आगम के सिद्धान्तों को गुरु सरलता से समझाते
हे गुरूवर सरलता से समझाते
चरणों में आके शीष झुकाके मन हुआ मेरा चंदन, हाँ चंदन
मुनि विमर्श.....2

आपके दर्शन करके मुनिवर मन पुलकित हो जाता
हे गुरूवर मन पुलकित हो जाता
कविता लेखन प्रवचन चिंतन भक्तों को अति भाता
हे गुरूवर भक्तों को अति भाता
हे करुणाकर, ज्ञान दिवाकर, काटो कर्मों के बंधन, हाँ बंधन
मुनि विमर्श.....6
हे करुणाकर, ज्ञान दिवाकर, माँ भगवती के नंदन, हे नंदन
मुनि विमर्श.....6

भजन-37

गुरूवर विमर्श सागर-2 ये महातपस्वी हैं
मुनिवर.....
वात्सल्य मूर्ति त्यागी मुनि परम यशस्वी हैं-2
अति सौम्य छवि सुन्दर-2 आनन्दित करती है
अति सौम्य.....
चलते फिरते तीरथ वाणी ओजस्वी है-2

सर्दी गर्मी वर्षा कितना परिषह सहते
मौसम कैसा भी हो अपने में ही रहते
श्रद्धा से करते नमन-2 मुनि तरुण तेजस्वी हैं
श्रद्धा से.....
मुनिवर विमर्श.....2

जिनवाणी माता के तुम राजदुलारे हो
भक्तों के भी मुनिवर आँखों के तारे हो
चरणों में आये सभी-2 मुनि महा मनस्वी हैं
चरणों में.....
वात्सल्य मूर्ति.....2

सद्गुणों से शोभित आप दुनियाँ से न्यारे हो
अक्षय निधियाँ पाऊँ मेरे आप सहारे हो
हे त्यागमयी सूरज-2 मुनि अति तेजस्वी हैं
हे त्यागमयी.....
चलते फिरते.....2

भावों की वेदी में मैंने तुमको बिठाया है
पूजा अर्चन करके ये अर्घ चढ़ाया है
हे चिदानन्द चेतन-2 मुनि महा मनस्वी हैं
हे चिदानंद.....
वात्सल्य मूर्ति.....2

मुनिवर विमर्शसागर-2 ये महातपस्वी हैं
मुनिवर.....
वात्सल्यमूर्ति.....2
अतिसौम्य छवि सुन्दर-2 आनंदित करती हैं
अति सौम्य.....
चलते.....2

भजन-38

गुरु जग तारण, गुरु सतज्ञानी, गुरु जीवन आधार है
तीनों लोक में श्री गुरुवर की, गूँजी जय-जयकार है।
विमर्श सागर नमो नमः-2
मन मेरा मन्दिर, गुरु मेरी पूजा-2
श्री विमर्श सिंधू सा, कोई न दूजा
बोलो गुरुवर की जय, गुण के सागर की जय
मन मेरे ऐसे गुरुवर के, गुण गाये जा
मन मेरा.....
श्री विमर्श.....
बोलो.....
मन मेरे.....
मन मेरा मंदिर.....

मात भगवती, पितु श्री सनत जी, के आँगन में जन्म लिया है-2
वीतरागी बन, सारे जगत को, मुक्ति का संदेश दिया है।
गुण गौरव चहूँ दिश है गूँजा
श्री विमर्श सिंधु.....
बोलो.....
मन मेरे.....
मन मेरा.....

श्री विमर्शसागर नमो नमः-4
विराग सागर से दीक्षा पाई, बन गये गुरुवर ज्ञान दिवाकर-2
पूजन भजन और काव्य रचाकर भर डाला गागर में सागर
विज्ञ जनों ने जिनको पूजा
श्री विमर्श सिंधु सा.....
बोलो.....
मन मेरे.....
मन मेरा.....

अति दृढ़ संयम, कठिन तपस्या, तप और त्याग तुम्हारा भारी-2
चुम्बकीय आकर्षण जिसमें खिंचे चले आते नर-नारी
तुमको देवों ने भी पूजा
श्री विमर्श सिंधु सा.....
बोलो.....
मन मेरे.....
मन मेरा.....
श्री विमर्श.....2
बोलो.....
मन मेरे.....
मन मेरा मंदिर.....
विमर्श सागर नमो नमः.....4

भजन-39

युवा त्यागी, हैं वैरागी, गुरुवर विमर्श सागर
बने है हम, तो बड़भागी, तुम्हारे दर्शन पाकर
कितनी छोटी आयु है और कितना गहरा ज्ञान है-2
साधु रतन श्री विमर्श सागर को शत-शत बार प्रणाम है-2
अति सुकोमल छवि है, जिनकी गुण रत्नों की खान है-2
साधु रतन.....2

मुख मण्डल की, अनुपम आभा, करे मोहित श्रावक जनको
वीणा जैसी, झंकृत होती, वाणी दे शक्ति मन को
कोमल गुरुवर की काया जिसमें तेज अनन्त समाया
लख छवि गुरुवर की निराली पूनम का चाँद शरमाया
ज्ञानी गुरुवर की समता गहरे सागर के समान है
कितनी छोटी.....
साधु रतन.....2
अति सुकोमल.....2
साधु रतन.....2

नव पीढ़ी के, बाल वृन्द के, दिव्य प्रेरणा स्त्रोत है ये
आगम पंथी, सरल स्वभावी, वात्सल्य से ओत-प्रोत है ये
ये ज्ञान खान को जगायें सबको सन्मार्ग दिखायें
दें समाधान उन सबको शंकायें जो ले कर आयें

ऐसे गुरुवर जिन पर हर इक श्रावक को अभिमान है
कितनी छोटी.....
साधु रतन.....2
अति सुकोमल.....2
साधु रतन.....2

जिनके दर्शन से अन्तरमन-पावन पुलकित हो जाये
पारस मणि से चरण को छूकर जीवन कंचन हो जाये
हम गुरुवर के गुण गायें और अपना भाग्य जगायें
आकर गुरु के चरणों में हम भव-2 से तर जायें
शब्दों में संभव नहीं गुरु की महिमा का गुणगान है
कितनी छोटी.....
साधु रतन.....2
अति सुकोमल.....2
साधु रतन.....2

युवा त्यागी हैं वैरागी, गुरूवर विमर्शसागर
बने हैं हम तो बड़भागी, तिहारे दर्शन पाकर
युवा.....
बने हैं.....

भजन-40

नगर जतारा की धरती के संचित पुण्य अपार-2
युवाचार्य गुरु विमर्श सागर-2 जहाँ लिया अवतार
नगर जतारा.....2

भाग्य जगे माता भगवति के आँगन फूल खिला-2
धन्य हुये पितु सनत की जिनको सुत-राकेश मिला-2
जन्म लिया जिस दिन गुरुवर ने-2 दिन था वो गुरुवार
नगर जतारा.....2

अध्ययन लेखन खेलकूद में थे राकेश प्रवीण-2
खेलते जब शतरंज तो रहते थे चिन्तन में लीन-2
दुनिया भी शतरंज की जिसके-2 मोहरे सब नर-नार
नगर जतारा.....2

गुरु विराग को देख के मन में जाग उठा वैराग-2
तोड़ दिये जग के बंधन घर-द्वार का करके त्याग-2
शांतिनाथ के साक्ष्य में कीना-2 ब्रह्मचर्य स्वीकार
नगर जतारा.....2

देवेन्द्र नगर में पिछी कमण्डल गुरुवर से पाया-2
और बरासो भिण्ड में वो मंगलमय दिन आया-2
त्याग के अम्बर हुये दिगम्बर-2 गूँज उठा जयकार
नगर जतारा.....2

कुंथूगिरि में गुरु विराग ने घोषित किया सहर्ष-2
कहलाये आचार्य श्रेष्ठ अब से मुनिराज विमर्श-2
पूरे हुये फिर बाँसवाड़ा में-2 सूरिपद संस्कार
नगर जतारा.....2
युवाचार्य.....2.....
नगर.....4

भजन-41

शिव पथ के ये पथिक चले हैं वेष दिगम्बर धार
धरती गगन करे विमर्श सागर गुरुवर की जयकार
हो-ऽऽ धरती गगन.....

तप का तेज श्री मुख पर चमके, रत्नत्रय की आभा दमके
हर्ष विषाद कछु मन नाहिं, रमें आत्महित चिंतन माहिं
शुद्धोपयोगी साधक योगी, जग से विरागी हुये हैं जोगी
संयम से कर लिया गुरुवर ने तन का श्रृंगार-2
धरती गगन करे.....
हो-ऽऽ धरती गगन.....

आगमोक्त चर्या के धारी सर्वहितैषी जग उपकारी
उपसर्गों में अविचल रहते समभावी रह परिषह सहते
द्वादशविध तप करते गुरुवर, संग दश धर्मों को धरते गुरुवर
पंचेन्द्रियों पर कर लीना है गुरुवर ने अधिकार-2
धरती गगन.....
हो-ऽऽ धरती गगन.....

गणाचार्य गुरु विराग सागर जिनकी महिमा है जग जाहिर
जो कृतियाँ जीवन्त गढ़ी हैं, मोक्षमार्ग की ओर बढ़ी हैं
विमर्श सागर शिष्य निराले, गुरु आज्ञा सिर धरने वाले
गुरु शिष्य दोऊ पर बलिहारी है ये संसार-
धरती गगन.....
हो-ऽऽ धरती गगन.....3

भजन-42

मिले हो गुरु हमको ये भाग्य हमारा है
शिष्य तेरा होना, एहसास ही न्यारा है
मिले.....
शिष्य.....
तेरा ही इंगित मिले उत चलें
सोचें क्या समझें फिर हम भला
मिले हो गुरु.....
शिष्य.....
मिले.....
शिष्य.....

तेरे नाम की ही माला जपते है, साँसो की लय में तुमको रटते हैं
जिंदगी में मेरे कैसे कोई कमी हो, तेरा होना गुरुवर सब कुछ है
सदा ही तुमने, तो हमें सँवारा है
शिष्य तेरा होना.....

तेरे चरणों में वारी हो जाऊँ मैं, भक्ति में, सुदबुद सारी खो जाऊँ मैं
बन्दगी जो ऐसी हो तो हो लूँ अमर, हनुमान जैसा मरके भी
डरूँ मैं क्यूँ आखिर, तू जो सहारा है
भक्त तेरा होना, एहसास ही न्यारा है
मिले हो.....
शिष्य.....
तेरा ही.....
सोचें क्या.....

भजन-43

तर्ज - जग घूमया थारे

गुरु ज्ञान की बातें सभी है दिल में उतारी तेरी
जब जब भी मैं उलझा हूँ तूने राह दिखाई सही
जग घूमया थारे जैसा ना कोई-2
जीवन की परीक्षा में मुझे जीत दिलाये तू ही
मेरे कर्मो की शिक्षा का मुझे राज बताये तू ही
हाथ तेरा मुझ पे रखना.....
जग घूमया थारे.....4
हर दुख दर्द में मेरा, होता है सहारा तू
जीवन की ऊँच-नीच में, जीना है सिखाता तू
दिल में है सुकून-ऽऽऽ
दिल में है सुकून कि तू मेरा रखवाला है।
हर कदम पे तूने मेरा जीवन सँवारा है
अंधेरे में उजाला तू ही, घनी धूप में छाया तू ही
कोई बात डराती नहीं, कोई मुश्किल आती नहीं
हाथ तेरा.....
जग घूमया.....2

तूने छूके-मुझ पत्थर, को मोती बनाया है
रहमतो से तेरी गुरुवर जीवन सुधारा है
भक्त हूँ तेरा-ऽऽऽ
भक्त हूँ तेरा मैं जैसे हनुमान राम का
प्रेम त्याग सेवा भाव से जीत लूँ मैं दिल तेरा
रख तू करुणा गुरु मेरे, रख दिल में तू मुझे तेरे
हर मार्ग उजाला करे, तेरी चरणों में हम रहें
हाथ तेरा.....
जग घूमया.....4

भजन-44

तर्ज - चाय बनन दो रे

अरे अहार जी के छोटे बाबा विमर्श सागर जी आये
दर्शन करके गुरुवर के सब नरनारी हर्षाये
भावलिंगी संत हैं ये भावी अरिहंत कहाये,
संकट मोचन तारण हारे गुरु मंत्र जग गाये,
(तो भईया ऐसे गुरुवर नगर में आय हैं
तो फिर हम सब का कर हैं)

गुरुवर नगर में आ गय रे घर घर चौक पुरन दो रे-4
ओ घर-घर चौक पुरन दो रे
घर-घर चौका लगन दो रे
गुरुवर नगर में आ गय नगर में आ गय नगर में आ गय रे
घर घर.....
गुरुवर.....

गुरु विमर्श जिस राह से गुजरे, माटी चंदन सी हो जावे-2
(तो का करें भईया-ऽ)
माटी सर पे लगन दो रे घर-घर चौक पुरन दो रे
गुरुवर.....4

ऐसे बुलावें तो वे नहिं आवे, भेजो निमंत्रण तो वे नहिं आवें-2
(तो का करें भईया ऽ)
तो पड़गाहन करन दो रे, घर-घर चौका.....
गुरुवर नगर में.....
ओ गुरुवर.....
नदिया को पानी वे नहीं लेवें, नलन को पानी वे नहीं लेवें-2
(तो का करें भईया ऽ)
तो कुँआ को चलन दो रे, घर-घर चौक.....
गुरुवर नगर में.....

भावलिंगी गुरु जिस घर जावें, वो घर मन्दिर सो बन जावे-2
(तो का करें भईया ऽ)
तो घर घर मंदिर बनन दो रे, घर-घर चौक पुरन दो रे
गुरुवर नगर में.....

भजन-45

तर्ज - ओ गुरु सा

ओ गुरु सा थारो चेलो बनुँ मैं, थारो चेलो बनूँ मैं,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं-
ओ गुरु सा.....
ओ गुरु सा.....
ओ गुरु सा.....

पहला ऋषभदेव जिन जिन वंदू-2
कि चौबीसवां महावीर स्वामी देवन को ।
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.....
सावन का महीना होगा उसमें होगी राखी-2
तू राखी तेरी डोर बनू मैं हाँ थारी डोर बनू मैं
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.....
ओ गुरु सा.....

अनन्त चौबीसी ने नित उठ बौंदू-2
कि बीस विहरमन देवन को ।
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.....
भादरवाँ का महीना होगा, उसमें होगी बारिश
तू बादल, तेरी बूँद बनूँ मैं, हाँ थारी बूँद बनूँ में
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.....
ओ गुरु सा.....

कार्तिक का महीना होगा जिसमें होगी दीवाली-2
तू दीपक तेरी ज्योत बनूँ मैं, हाँ थारी ज्योत बनूँ मैं
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.....
ओ गुरु सा.....
हर पल तेरे.....

सौलहवाँ श्री शान्तिनाथ जिन जिन बौंदू-2
तेईसवाँ पारसनाथ देवन को
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.....
फागुन का महीना होगा उसमें होगी होली-2
तू पिचकारी, तेरा रंग बनूँ मैं, हाँ तेरा रग बनूँ मैं
हर पल तेरे.....
ओ गुरु सा.....
ओ गुरु सा.....2

भजन-46

जिनके आगममयी वचन आध्यात्म की ज्योत जलाते हैं-2
युवाचार्य गुरु विमर्श सागर को हम शीश नवाते हैं-2
देते ज्ञान आत्मा का परमात्मा से मिलन कराते हैं-2
युवाचार्य.....2

मूलाचार को हृदय बसाये, निज पथ पर गुरु चलते जाये
दिव्य ललाट प्रशस्त मुख मुद्रा, देखें तो सूरज चाँद लजाये
गणधर जैसे ज्ञानी, वाणी सत्य प्रमाणी
देखके तप अचरज में, पड़ जाते हैं प्राणी
अपने-2 हृदयासन पर भक्त जिन्हें बिठलाते हैं-2
युवाचार्य गुरु.....2
देते ज्ञान.....2
युवाचार्य गुरु.....2

कीना अदभुत साहित्य सृजन, गीत गजलें छन्द और भजन
शब्दों से ही गुरु ने चेताया, नर तन का क्या है लक्ष्य बताया
सद्गुरु के बिना नहीं जग में शरण, कीन्हा अद्भुत साहित्य सृजन
गीत गजलें, छन्द और भजन.....

सिद्ध वचन गुरुवर के लगते मंत्रों जैसे,
पुण्य योग से मिलते साधक योगी ऐसे

माँझी बनकर भक्तों को जो भव जल पार लगाते हैं-2
युवाचार्य गुरु.....2
देते ज्ञान.....2
युवाचार्य गुरु.....2

दृढ़ चर्या और दृढ़ अनुशासन, आगमोक्त नियमों का पालन
परम कुशलता से करते हैं, शिष्य संघ का शुभ संचालन
अध्ययन और अध्यापन, जिनवाणी का वाचन
चिंतन और मंथन से, करें आत्म का शोधन
हर सुख दुख में समभावी रह हर दायित्व निभाते हैं
हर सुख दुख में समता धरके, हर दायित्व निभाते हैं
युवाचार्य गुरु.....2
देते ज्ञान.....2
युवाचार्य गुरु.....4

आरती-47

गुरुवर विमर्श सागर तुमसे, जिनशासन में उजियारा है
हमको गुरुवर सद्ज्ञान दिया, हम पर उपकार तुम्हारा है

झूठे जग का परिभ्रमण देख, मेरा अन्तरमन भ्रमित हुआ,
पाकर तेरा सानिध्य सुमति तरु पुष्पित और पल्लवित हुआ
थी बीच भँवर-थी बीच भँवर जीवन नैया
गुरु तुमने दिया सहारा है
गुरुवर विमर्श.....

गुरु योगसार सम प्राभृत ग्रंथ की प्राकृत टीका की तुमने,
तेरी कलम से विरचित आत्मोदयी हिन्दी टीका भी पढ़ी हमने,
गागर में, गागर में सागर भर डाला
गुरु उद्भट ज्ञान तुम्हारा है
गुरुवर विमर्श.....

तुमने गुरुवर वो गीत लिखा, जो हर जैनी ने गाया है,
ये जीवन है पानी की बूँद, ये अद्भुत भजन रचाया है,
काया-माया, काया-माया क्षणभंगुर है
नश्वर जग वैभव सारा है
गुरुवर विमर्श.....

पूजन संस्कार शिविर में जो, बड़भागी श्रावक आते हैं
गुण ज्ञान और अनुभव की अक्षुण्ण पूँजी तुमसे वो पाते हैं
जो भक्त-जो भक्त शरण में आया है
चमकाया भाग्य सितारा है
गुरुवर विमर्श.....
हमको गुरुवर.....

भजन-48

तर्ज - प्रभु जैसा रूप

प्रभु जैसा रूप तुम्हारा, श्री मुख से बहे ज्ञान की धारा-2
हो-ऽ ये दुर्गम पथ स्वीकारा, मन में संयम धारा
अतुलित तप त्याग तुम्हारा, लगे हमें प्यारा
हो-ऽ ये दुर्गम.....
अतुलित.....
प्रभु जैसा.....

1 उज्जवल निर्मल धवल सुकोमल, देह तुम्हारी कंचन-2
चलते-फिरते तीरथ जैसे पदपंकज हैं पावन
हर परिग्रह का बोझ उतारा, पिच्छी कमण्डल तुमको प्यारा
सिद्ध शिला है लक्ष्य तुम्हारा
प्रभु जैसा.....श्री मुख.....

2 गाँव नगर में डगर-डगर में, ज्ञान के दीप जलाते-2
लग जाता है समवशरण वहीं जहाँ गुरुवर थम जाते,
ज्यों अम्बर में है ध्रुवतारा, यूँ ही दमके नाम तुम्हारा,
तुमसे रोशन है जग-सारा
प्रभु जैसा.....श्री मुख.....

3 तीर्थंकर भगवन्तों ने जो, मुक्ति की राह दिखाई-2
उन पद चिन्हों पर अनुगामी होके चले मुनिराई
कितनो का ही भाग्य सँवारा, कितनों का है कष्ट निवारा
शत्-शत् तुमको नमन हमारा
प्रभु जैसा.....श्री मुख.....
हो-ऽ ये दुर्गम.....
अतुलित.....
प्रभु जैसा.....श्री मुख.....
प्रभु जैसा.....श्री मुख.....

भजन-49

दीप खुशियों के हैं जल उठे, बड़ा आनन्द छाया है-2
गुरुवर विमर्शसागर के, आचार्य पदारोहण का, शुभ मंगलमय दिन आया है
दीप खुशियों.....2

पुण्य प्रताप ये राजस्थान की धर्मधरा का भारी,
साक्षी बने इस अभूतपूर्व आयोजन के नर नारी,
धन्य धन्य हैं ये बाँसवाड़ा के, वासी सब श्रावक जन
देखा जिन्होंने गुरु शिष्य का वात्सल्यमयी संगम
वह पावन दुर्लभ अवसर, स्मृतियों की पूँजी बनकर
सबके हृदयों में समाया है
दीप खुशियों.....2

गुरुवर विराग सागर के ये शिष्य बड़े ही प्यारे,
देखके जिनकी प्रज्ञा हतप्रभ रह जाते हैं सारे,
अतुलित गुण और ज्ञान धरोहर गुरु विराग से पाई,
एक शिष्य ने कीर्ति गुरु की सारे जग में बढ़ाई
ओ गुरु पथ पर हो अनुगामी, वे संत हुये जगनामी,
निज गुरु का मान बढ़ाया है
दीप खुशियों.....2

नहीं किंचित् चाहत थी पद की, मुनि विमर्श के मन में
वे समभावी होके रमे थे, साधु के जीवन में
सूरीपद देने की गुरू विराग ने बात विचारी
मुनिवर विमर्श ने आज्ञा गुरुवर की सहज स्वीकारी
गुरु आज्ञा माथे लगाई, आचार्य बने मुनिराई
यह गुरुतर भार उठाया है

दीप खुशियों.....2
गुरुवर विमर्श.....
दीप खुशियों.....4

भजन-50

जिनके दिल में तुम बसे हो वो दिल दुखा रहे हो-2
गुरुदेव छोड़ हमको, तुम क्यों जा रहे हो ओ-ऽऽऽ
चार महिने हाथ थामा, अब क्यूँ छुड़ा रहे हो
गुरुदेव.....ओ-ऽऽऽ

जब से आँगन में पधारे, हो गये जीवन में उजाले
चमके खुशियों के सितारे
गुरुदेव तुम मिले-2

निर्मल चारित्र तुम्हारा, अज्ञान हरने वाला
आतम हित हो सुखकारा,
गुरुदेव तुम मिले-2

तुम शरण है भली, बड़े पुण्य से मिली
आत्मा है खिली
चरणों में, बैठे ही थे, तुम दूर जा रहे हो
गुरुदेव छोड़.....ओ-ऽऽऽ

भजन-51

तुम जैसे कहीं और हमें गुरुवर ना मिलेंगे-2
हमें छोड़कर ना जाना-2 हमें भूल ना जाना
तुम जैसे.....2

अश्कों से भरी आँख का, मतलब गुरु समझो
मतलब गुरु समझो
कँपते हुये होठों का मतलब हे गुरु समझो
मतलब गुरु समझो
क्या हमको तेरे दर्श के-2 मंजर ना मिलेंगे
तुम जैसे.....2

समताधारी करुणाधारी ममता करें गुरु
करुणा ममता स्नेह की वर्षा करे गुरु, वर्षा करे गुरु
क्या हमको तेरे स्नेह के-2
समंदर ना मिलेगें
तुम जैसे.....2

भजन-52

तर्ज - हार नहीं होगी

गुरुवरा-ऽऽ सर पे तेरा हाथ है
गुरुवरा-ऽऽ डरने की क्या बात है
ये प्रार्थना दिल की, बेकार नहीं होगी-2
पूरा है भरोसा मेरी, हार नहीं होगी
गुरुवरा-ऽऽ सर.....
गुरुवरा-ऽऽ डरने.....

मैं हार जाऊँ ये, कभी हो नहीं सकता-2
बेटा अगर दुःख में, पिता सो नहीं सकता-2
बेटे की हार तुम्हें, स्वीकार नहीं होगी-2
पूरा है.....2
गुरुवरा-ऽऽ सर.....
गुरुवरा-ऽऽ

घनघोर चले आँधी, सूने नजारे हों-2
गर्दिश में भी चाहे, मेरे सितारे हों-2
नैया कभी मेरी, मँझधार नहीं होगी-2
पूरा है.....2
गुरुवरा-ऽऽ सर.....
गुरुवरा-ऽऽ डरने.....

श्रद्धा समर्पण हो, दिल में अगर प्यारे-2
हर भक्त को आकर भगवान खुद तारे-2
इज्जत जमाने में, शर्मसार नहीं होगी-2
पूरा है.....2
गुरुवरा-ऽऽ सर.....
गुरुवरा-ऽऽ डरने.....

भजन-53

देखो हमारे गुरुवर सूरज से चमकते हैं-2
देखो हमारे गुरुवर, सूरज से चमकते हैं-2
लाखों हजारों प्राणी-2दर्शन को तरसते हैं
लाखों हजारों प्राणी-2दर्शन को तरसते हैं
देखो हमारे.....

ये भावलिंगी गुरुवर है। जग से कुछ निराले-2
भक्तों के संकटों को ये दूर करने वाले-2
लाखों हजारो..... देखों हमारे.....

भक्तों के मन में श्रद्धा के द्वीप से जलते है-2
देखो हमारे गुरुवर सूरज से निकलते है-2
लाखों हजारो..... देखों हमारे.....

गुरुवर विमर्श सागर जिस राह से चलते है-2
स्वर्गों के देवता भी दर्शन को मचलते है-2
लाखों हजारो..... देखों हमारे.....

भजन-54

जाओ गुरु चाहे जहाँ, आयेंगे हम तो वहाँ-2
मन में हमारे बसे गुरु जाओगे अब तुम कहाँ
जाओ गुरु चाहे.....2

वात्सल्य, के हो सागर, ज्ञान के तुम सूर्य हो
हित-मित प्रिय है वाणी, तुम हमारे वीर हो
वात्सल्य.....
हित-मित.....
मुस्कान से आपकी, होता सम्मोहन सारा जहाँ
जाओ गुरु चाहे.....2
मन में.....
जाओ गुरु.....2

महिमा, गुरु तुम्हारी, कोई भी न बता सके
सूरज को क्या कोई, दीपक दिखा सके
महिमा.....
सूरज.....
सबको दीवाना कर देते हो आप जाते हो गुरुवर जहाँ
जाओ गुरु चाहे.....2
मन में.....
जाओ गुरु.....2

इस युग के, आप सच्चे, भावलिंगी संत हो
सूरि विमर्शसागर, आप भावी अरिहन्त हो
इस युग के.....
सूरि.....
देवों के हे देवता, कोई गुरु और तुमसा कहाँ
जाओ गुरु चाहे.....2
मन में.....
जाओ गुरु चाहे.....4

भजन-55

छोड़ दिया घर परिवार नहीं दौलत ये रखते हैं
नहीं चलते मोटर कार पर सदा पैदल ही चलते हैं।
करे आहार एक बार और अंतराय पालते हैं।
त्याग की क्या कहूँ महिमा दिगम्बर वेश धरते हैं।

आ आ आ हो हो हो
मेरी बात में है वह सच्चाई, यह झूठा कोई उपदेश नहीं
मेरे गुरुवर जैसा कोई और नहीं।

यह पाँच इन्द्रिय को वश में करें, ना बात करें आडम्बर की।
चले मोक्ष मार्ग की राहों पर, क्या बात है वेश दिगम्बर की।
मेरे गुरुवर.....

यह पाँच पाप से दूर सदा, और पाँच महाव्रत धारी हैं।
चारों कषाय को तजकर, के रहते समता के धारी हैं।
मेरे गुरुवर.....

जीवों पर घात ना होवे कभी, सदा ध्यान गुरुवर रखते हैं।
प्राणी पर करुणा है इतनी, पिच्छी मयूर की रखते हैं।
मेरे गुरुवर

भजन-56

ना इनसा जोगी ना इनसा ज्ञानी
ना वीतरागी वसुंधरा में
तप त्याग संयम पर्याय जिनकी
है संत ऐसे गुरु विमर्श सागर

निर्दोष पालन करें चर्या ये जागते-सोते
संत विमर्श सागर जैसी धरती पर
भक्तों बार-बार नहीं होते
जय-जय गुरुवर विमर्श सागर

जिनशासन है सुरभित-शोभित जिस साधक के कारण
एक आध्यात्मिक गुरुकुल जैसा गुरुदेव का जीवन

त्याग तप और संयम यहीं इनके है। आभूषण
करके अतुलित ज्ञान अर्चन पा लिया मोक्ष साधन
आत्मा को निशदिन परमात्मा में डूबोते
संत विमर्श सागर जैसी धरती पर

पंचम युग में यूँ तो असंभव है भगवान को पाना
पुण्य उदय से संत का ऐसा है धरती पर आना
जिस्म तीर्थंकर की छाया तेज अद्भुत है समाया
विमर्श सागर पा लिया तो महावीर को पाया
जिनको सुनाते व्यथा मूक पशु ही रोते-2
संत विमर्श सागर जैसी धरती पर

भजन-57

तर्ज - ऐसा देश है मेरा

धवल वर्ण अरु शान्त छवि का, रंग बड़ा है गहरा-2
ऐसा गुरु है मेरा-हो-ऽऽ ऐसा गुरु है मेरा।
मन मोहन मुस्कान बिखरती, दे आशीष घनेरा
ऐसा गुरु है मेरा-ऽऽ-2

माँ भगवती के आँगन में, गुरुवर ने ली किलकारी-2
ना थी उम्मीद किसी को, अरिहंत बनेगें भावी
हो जाये वह नगर धन्य जहाँ-हो-ऽऽ पड़े जहाँ पग तेरा
ऐसा गुरु है मेरा-ओ-ऽऽ-2

गुरु लघुनन्दन कहलाते, श्री शान्तिनाथ बाबा के-2
देते उपदेश ये भारी बस जिनवाणी माता के
संकट मोचन तारण हारे-हो-ऽऽ-मंत्र बन गया तेरा
ऐसा गुरु है मेरा-ओ-ऽऽ-2

हो जम्बूद्वीप के नेता, गुरुवर को मिली उपाधी-2
जो नाम रहे तेरा गुरुवर, हो नष्ट उसकी सब व्याधी
श्री चरणों का भक्त बना हूँ-हो-ऽऽ-अब दास बनूंगा तेरा
ऐसा गुरु है मेरा-ओ-ऽऽ-2

जो रहते गुरु चरणों में, करते हो नित अभिनंदन।
गुरु का दुलार पाते है, सपनों में करते चिंतन।
गुरु की मृदुरवाणी सुनकर-हो-ऽऽ-होता रोज सवेरा
ऐसा गुरु है मेरा-ओ-ऽऽ-2

भजन-58

मुझे तुम याद आते हो, ओ गुरुवर याद आते हो-2
मेरी नींदें चुराते हो गुरुवर याद आते हो
मेरे मन में, तुम्हीं रहते, सदा हँसते, हँसाते हो
मेरी धड़कन में तुम बसते वो धड़कन तुम चलाते हो
मेरे सपनों में आते हो, गुरुवर याद आते हो
मुझे तुम याद.....

करूँ मैं प्रीत तुमसे ही, मुझे तुम क्यों सताते हो
तेरे दर्शन का व्रत मेरा, तो चेहरा क्यूँ छिपाते हो
हमें अपना बनाके क्यूँ गुरुवर भूल जाते हो
मुझे तुम याद.....

मेरी श्रद्धा तुम्हीं में है, तुम्ही ही हो मेरे भगवन
ना जग में है कोई दूजा, दिखे है जिसमें अपनापन
अमिट इक साथ तेरा ही गुरुवर याद आते हो
मुझे तुम याद.....

आ जाओ गुरुदेवा, ना तरसाओ गुरुदेवा
अखियाँ प्यासीं गुरुदेवा आ-भी जाओ गुरुदेवा
मेरे मन की है चंचलता, उसे सीधा चलाते हो
मैं भूलों में रहा डूबा, मुझे तुम ही बचाते हो
मेरे तुम ही सहारे हो गुरुवर याद आते हो
मुझे तुम याद.....
मेरी नींदे.....
गुरुवर याद आते हो.....3

भजन-59

करुणा करो गुरुदेव, रहमत करो गुरुदेव
अब तो आ भी जाओ, जल्दी आ भी जाओ
ऐसे ना रुलाओ, जल्दी आ भी जाओ
करुणा.....
अब.....
ऐसे.....

दर्श को तरसे ये नैना, दिन कटे कटे ना रैना
देर ना लगाओ-ऽऽ
अब तो.....
ऐसे.....

तेरे सिवा मेरा कोई नहीं, तुझसे ही मेरी जिन्दगी
साँसो में हो तेरा सुमिरण साधना मेरी यही
तेरे सिवा.....
साँसो.....
तुमसे शौहरत है हमारी, तुम्ही ही दौलत हो हमारी
तुमसे रोशन चाँद तारे, हर खुशी हर इक नजारे
लौट अब आओ,
अब तो.....जल्दी.....
ऐसे ना.....जल्दी.....

आभी जाओ ना गुरु जी, आभी जाओ ना
यूँ रुलाओ ना गुरु जी, यूँ रुलाओ ना

हमको बस तेरी जरूरत दिल मैं ख्वाहिश है तेरी
दर्श बिन तेरे गुरूवर भीगी हैं अखियाँ मेरी
हमको बस.....
दर्श बिन.....
सूना लगता ये जहाँ है, फीका लगता हर समां है
यूँ ना तड़पाओ अब तो.....जल्दी आभी.....

यूँ तो हैं जग में हजारों पर कोई तुमसा नहीं
तेरे दर पे जो है मिलता वो नहीं मिलता कहीं
यूँ तो हैं.....
तेरे दर.....

तेरे कदमों में है जन्नत हमको है बस तेरी चाहत
पास हरदम तुम रहोगे दिल ने माँगी है ये मन्नत
मान भी जाओ
अब तो आ-भी..... जल्दी.....
करुणा करो.....
अब तो.....
ऐसे.....

भजन-60

मेरे गुरुवर, तेरे बिना हम रहना पायेंगे-2
तुमसे जुदा, हो ना कभी, हम सहना पायेंगे
मैंने पकड़ा है हाथ तेरा, तू ही मालिक खुदा है मेरा
तेरी ममता की छाँव में हो, मेरे जीवन का हर सबेरा
मेरे गुरुवर, तेरे बिना, कैसे हम.....
तुमसे जुदा.....

बड़ा मुश्किल अब है जीना, तुम बिन मन लगे कहीं ना
जब से गये हो गुरुवर, जीवन हुआ विराना
बड़ा मुश्किल.....जबसे गये.....
करुणा ये हम पे करदो, करुणा निधान तुम हो
तुमसे ही तुमको माँगें, ऐसा ही हमको वर दो
मेरे गुरुवर.....तुमसे जुदा.....

धड़कन में तुम हो रहते, साँसें तुम्हीं से चलतीं
मेरे जीवन की ये बगियाँ, तुमसे ही है महकती
धड़कन में.....मेरे जीवन.....
तुम्हें पाकर लगे है ऐसा मैंनें सारा जहाँ है पाया
मेरी जिंदगी में आकर, अपना मुझे बनाया
मेरे गुरुवर.....तुमसे जुदा.....

कब होंगे तेरे दर्शन, बैचेन हैं ये नैना
इंतजार है अब तेरा, आजाओ मेरे कृष्णा-2
कब होंगे.....इंतजार.....
भक्तों के तुम सहारे, तेरी यादों में दिन गुजारे
हो गये हम बेसहारे, हर पल तुम्हे पुकारे
मेरे गुरुवर.....तुमसे.....
तुमसे जुदा.....
मेरे गुरुवर.....तुमसे.....

भजन-61

तर्ज - थोड़ा सा प्यार

आसरा एक तेरा, एक तेरा सहारा.....2
मेरी फरियाद सुन लो, होऽऽऽ.....
मेरी.....
दे दो कोई किनारा,
आसरा एक.....

जख्म खाये हैं कितने, घाव कितने गिनाऊँ,
कोई सुनता नहीं है, जा के किसको सुनाऊँ,
जख्म खाये....., कोई सुनता.....
एक तुमपे ही गुरुवर, हो ऽऽऽ.....
एक.....
जोर चलता हमारा,
आसरा एक.....

टूटी कश्ती हमारी, टूटे सारे किनारे
गमों ने ऐसा घेरा, जीती बाजी भी हारे,
टूटी कश्ती....., गमों ने.....
कभी तो पूँछ लेते, हो ऽऽऽ.....
कभी.....
हाल आके हमारा,
आसरा एक.....

कैसे बदलेगी किश्मत, कैसे बदलेंगे ये दिन
जिंदगी कब हमारी, होगी खुशियों से रोशन,
कैसे बदलेगी....., जिंदगी कब.....
अब तो दिन में भी गुरुवर, हो ऽऽऽ.....
अब.....
लगता हमको अँधेरा, आसरा एक.....2
आसरा एक तेरा.....
मेरी.....हो-ऽऽऽ
मेरी फरियाद सुन लो, दे दो कोई किनारा
आसरा एक.....3

भजन-62

तर्ज - सपने में रात वो आया...

भक्तों के दुख हरते हैं अहार जी वाले ऽऽऽ
छोटे बाबा विमर्शसागर जग के रखवाले-2

है कोटि सूर्य सम आभा, श्री मुख मण्डल पे भारी
पूनम के चंदा जैसी, शीतल मुस्कान तुम्हारी
सब पा जाते हैं, नाम तेरा जपने वाले-ऽऽऽ
छोटे बाबा.....

सबके दिल में रहते हैं, फिर भी हैं सबसे न्यारे
नहीं किसी से प्रेम करें ये, पर हैं ये सबको प्यारे
भक्तों के दिल में, वो पल पल बसने वाले ऽऽऽ
छोटे बाबा.....

दोनों हाथों से गुरुवर, भक्तों पे प्यार लुटाते।
जो भी दर पे आते हैं, वो खाली हाथ न जाते।।
भक्तों की खाली झोली को भरने वाले ऽऽऽ
छोटे बाबा.....

तुम रहो चिरायु गुरुवर, हम यही भावना भायें।
हम सब भक्तों की तुमको, गुरुदेव उमर लग जाये।।
तीनों लोकों में गूँज रहे, गुरु जयकारे ऽऽऽ
छोटे बाबा.....

कव्वाली-63

शेर- करम ये तेरा कायनात में समाया है।
कृपा से आपकी भक्तों में असर आया है।।

मुसीबतों में भी महफूज खुद को पाया है।
मेरे सर पे गुरु विमर्श तेरा साया है।।
जमाने भर की ठोकरें मुझे गिरा न सकीं।
जबसे मेरे हाथ में गुरु हाथ तेरा आया है।।

नजर ये आपकी जादू सा कोई करती है।
बिना माँगे ही सबकी झोलियों को भरती है।
मैंने दरबार से गुरु आपके सब पाया है।
मेरे सर पे.....

सबकी हाथों की लकीरों में हैं नसीब लिखा।
मुझे हर इक लकीर में गुरु का कर्म दिखा।।
मेरे नसीब को गुरु आपने चमकाया है।
मेरे सर पे.....

हे भावलिंगी संत! आपके चरणों में नमन।
हुये उपकृत तुम्हें पाकर के धरा और गगन।।
हमने श्रद्धा का दीप उर में अब जलाया है।
मेरे सर पे.....

भजन-64

गुरुदेव की महिमा का कोई अंत नहीं है।
कोई इनसा भावलिंगी दूजा संत नहीं है।।
गुरुवर विमर्श आपकी ये भाव साधना।
पाकर तुम्हें लगता हमें अरिहंत यहीं हैं।
गुरुदेव की.....

सूरज सा अमित तेज सदा चेहरे पे बिखरा।
शुभ भावलिंगी साधना से रूप है निखरा।।
तुमसे ही श्रमण साधना जीवंत रही है।
गुरुदेव की.....

जब जब पुकारा हमने सहारा हमें दिया।
भटके हुये थे भव का किनारा हमें दिया।।
करुणा में आपसा कोई यशवंत नहीं है।
गुरुदेव की.....

रोशन है मेरी दुनिया आपके ही प्यार से।
सब कुछ मिला हमें गुरुजी तेरे द्वार से
कोई आपसा जगत में कृपावंत नहीं है।
गुरुदेव की.....

भजन-65

कोरस- नमो विमर्श गुरुवरा, नमो विमर्श गुरुवरा-2
हे भावलिंगी संत है नमन, नमन यतीश्वराः-2

गुरु विमर्श की दिव्य साधना का है अतिशय भारी।
जिनका यश गाते हैं सुरगण गाते सब नर नारी।।

कोरस- छोटे बाबा की जय जय करो,
ध्यान चरणों में उनके धरो।-2 गुरू विमर्श...

सत्य साधना नाथ आपकी शिव सी उज्ज्वल निर्मल।
मन की शुचिता ऐसी गुरुवर जैसे हो गंगाजल।।
मानो सिद्धालय जाने की करली है तैयारी।
गुरु विमर्श.....

उदयाचल पर सूरज भी नित दर्शन को आता है।
चरण धुलाने सागर भी नित मचल-मचल जाता है।।
विनयशील हो जिनके शुभगुण गाती सृष्टि सारी।
गुरु विमर्श.....

भाव साधना हे गुरुवर! तुममें साकार हुई है।
तब ही सच्चे भावलिंग की जय जयकार हुई है।
अमरपुरी दर्शन को लालायित रहती है सारी।
गुरु विमर्श.....

शीतल चंदा जैसा मन है कंचन सी शुभ काया।
तीनों लोकों में हे गुरुवर! तुमसा कोई न पाया।।
तुमको पाकर महक उठी है चेतन की हर क्यारी।
गुरु विमर्श.....

भजन-66

गुरुवरा-गुरुवरा तुमको पाकर, धन्य हुई ये धरा
पुलकित वदन हर्षित है मन, रोम-रोम है खिला हुआ
गुरुवरा.....

हे धरती के देव दिगम्बर, झुकते चरणों में धरती-अंबर
हो महाव्रतों के धारी गुरुवर, रखते न कोई आडम्बर
वात्सल्य करुणा से, हृदय है भरा हुआ
गुरुवरा.....

शबरी के तो राम हो गुरुवर, चंदन के हो महावीर
श्रद्धा और भक्ति की, गुरुवर हो तुम तस्वीर
जिनशासन गुरुवर आपसे उन्नत हुआ
गुरुवरा.....

गुरुवर हमको ऐसे मिले, जैसे गौतम को महावीर मिले
तुफाँ में भी डूबती कश्ती को, जैसे किनारे आन मिले
तुमको पाकर लगता है जैसे, भव सागर का अंत हुआ
गुरुवरा.....

वीतरागता तन से झरती, तीर्थंकर सी लगती है वाणी
भोली सी मुस्कान आपकी, लगती गुरुवर सबको प्यारी
देख आपकी महिमा गुरुवर, देवलोक भी नत् हुआ
गुरुवरा.....

भजन-67

तर्ज-एक बार तो राधा...

आहार जी के बड़े बाबा, छोटे बाबा तारण हार
भक्तों की सुनलो पुकार
हर आँख में आँसू हैं
पलकों में छाई नमी
सुख रहता ढूँढता दुनिया में आदमी
संकट मोचन तारण हारे कर दो बेड़ापार
भक्तों की.....
श्रद्धा होती सच्ची तो हर काम होता है।
गुरुवर के बिना जीवन बेकार होता है।
सच्ची श्रद्धा और भक्ति का पहिनादो गुरु को हार
भक्तों की.....
जब पीड़ा होती है, जब दर्द होता है।
बडे बाबा की भक्ति से, पल में दूर होता है।
शान्तिनाथ की भक्ति से होते हैं चमत्कार
भक्तों की.....
कोई दुखिया द्वारे पर हर रोज ही आता
बड़े बाबा की भक्ति दुख दूर ही पाता
शान्ति बाबा की भक्ति से कटते हैं
कष्ट अनेको अपार
भक्तों की.....
अहार जी.....

भजन-68

(विमर्श कैम्प)

गुड कन्ट्रोल-2, वन मोर टाइम, गुड गुड
गुड कन्ट्रोल-2
आइ एम रीडर-2
हर कोई पढ़ने वाला, हर कोई सीखनेवाला-2
अपना तो कैम्प प्यारा, विमर्श कैम्प प्यारा-2
गुड कन्ट्रोल

चारित्र की किताबें हैं, हम वो पढ़ने आते हैं
राइट नॉलेज बुक मेरी, जिन आगम लाइब्रेरी।
मॉरैल्टी का सेशन है, डिसीप्लिन का लेसन है।
विशु दीदी की टीचिंग, विद मॉडिफिकेशन है।।
विद मॉडिफिकेशन है-2
गुड कन्ट्रोल-2, आइ एम रीडर

खेल खेल में अच्छे मैनर्स पाते हैं
ड्रॉइंगगेम्स पेन्टिंग आलराउंडर बनाते हें।
हर कोई पढ़ने वाला, हर कोई सीखने वाला
रिलीजस प्रिसेप्टर, सूरि विमर्शसागर हैं
चिल्ड्रन्स के आइडियल, ब्लेसिंग सुपर पावर हैं
हर कोई पढ़ने वाला, हर कोई सीखने वाला
अपना तो कैम्प प्यारा, विमर्श कैम्प प्यारा-2
आइ एम रीडर, गुड कन्ट्रोल

भजन-69

सारे तीरथ गुरु चरणों में, सम्मेद शिखर गिरनार
गुरुवर के चरणों में तो, हर दिन लगता है त्यौहार
गुरुवर ओ प्यारे गुरुवर

नगर जतारा की वह माटी, देखो कितनी पावन है
बनी जन्म भूमि गुरुवर की, लगती अति मन भावन है
बहती जहाँ मदन सरोवर की, निर्मल जलधार
गुरुवर के.....

जग की लक्ष्मी तो चंचल है, पर तेरा मन निश्चल है
स्वार्थमयी इस वसुधा पर, तेरा त्याग ही निश्छल है
कठिन साधना गुरुवर, आपकी है मुक्ति का द्वार
गुरुवर के.....

दुनिया चाहे रूठ भी जाये, रूठे न गुरु का प्यार
सांसे चाहे छूट भी जायें, छूटे न गुरु का द्वार
होता है गुरु चरणों में ही, शिष्यों का उद्धार
गुरुवर के.....

श्रद्धा और भक्ति की हैं, गुरुवर एक मिशाल
भोली सी मूरत गुरुवर की, हृदय है बड़ा विशाल
वात्सल्य शिरोमणि, गुरुवर करुणा के अवतार
गुरुवर के.....

भजन-70

तर्ज-जीवन कर लेता है

रहना है, रहना है, निज घर में, मुझे रहना है।
पाना है, पाना है, शिव सुख मुझको पाना है।।
पाना है.....

मैं ज्ञायक स्वरूपी हूँ, चिदानंद चिद्रूपी हूँ
रागी नहीं मैं, द्वेषी नहीं मैं, वीतराग स्वभावी हूँ
शिवपुरी है मेरा ठिकाना, गुरुवर ने बतलाया है
पाना है.....

भक्तों के आप सहारे हो, शिष्यों के पालनहारे हो
अहार जी के छोटे बाबा, गुरुवर आप कहाते हो
कष्ट उसके मिटाते हो, श्रद्धा से जो भी आता है
पाना है.....

दर्श गुरुवर का पाना है, चरणो में शीश झुकाना है
संयम से आतम को सजाना है, भव से पार जाना है
रत्नत्रय आतम का गहना है, गुरुवर का कहना है
पाना है.....

भजन-71

तर्ज-वादा न तोड़...

भक्ति करो गुरु भक्ति करो, भक्ति करो
गुरु भक्ति से कटते करम.....
भक्ति करो.....

कोई नहीं हैं गुरुवर, तुम बिन हमारा
छोड़ आये गुरुवर, हम तो ये जग सारा
चरणों में पड़े हैं हमको, शरण मे लो...
भव पार करो.....

मझधार पड़ी है, गुरुवर नैया हमारी
पार लगा दो गुरुवर, ये विनती हमारी
देकर सहारा गुरुवर भव पार करो...
भव पार करो.....

आये हैं गुरुवर हम तो, शरण तुम्हारी
पाना है हमको तो, मरण समाधी।।
सम्यक्त्व गुरुवर, अब उर में भरो...
भव पार करो.....

आहार जी के छोटे बाबा, दीनों के सहारे हो
शांति प्रभु के लघुनंदन, कष्ट पल में मिटाते हो
चरणों में नमन हमारा स्वीकार करो...
भव पार करो.....

छवि वीतरागी गुरुवर लगती है प्यारी
दर्शन से मिट जाती, है आधि-व्याधि
पूजा गुरु चरणों की नित करते रहो
भव पार करो.....

भजन-72

तर्ज-आये हो मेरी

पाया जो गुरु का दर्श तो, कमाल हो गये
पा भावलिंगी गुरु को, हम निहाल हो गये
पाया.....

भटक रहे थे अब तलक हम, जिसकी चाह में
वो मिल गया हमें, गुरु विमर्श की पनाह में
ये धरती चाँद तारे अब हमारे हो गये
पाया.....

आहार जी के छोटे बाबा, गुरुवर आप कहाते
देव-देवियाँ भी चरणों, शीश झुकाते
भक्तों के गुरुवर आप तो, भगवान हो गये
पाया.....

धरती का बिछौना बना, अंबर है ओढ़नी
काँटों भरी पथरीली राह, गुरुवर आपने चुनी
शांति प्रभु के आप तो लघुनंदन हो गये
पाया.....

धन्य हैं गुरुवर जो, हमने पाया आपको
आया शरण में जो भी, उसको करते मालामाल हो
काँटों भरे ये रास्ते, फूलों के हो गये
पाया.....

भजन-73

तर्ज-आत्म शक्ति से ओत प्रोत

भक्ति भाव से गुरु चरणो में, हम सब शीश झुकायें
गुरुवर के गुण गायें.....
गुरु विमर्श की जन्म जयंती, हम सब मिलके मनायें
गुरुवर के गुण गायें.....

वात्सल्य शिरोमणी गुरुवर, कृपा दृष्टि बरसाते
भव्यजनों को सच्चे पथ का, गुरुवर मार्ग दिखाते
ऐसे सत्पथ के दर्शायक, गुरु को हृदय बसायें
गुरुवर के गुण गायें.....

वीतराग मुद्रा के धारी, हँसमुख सरल स्वभावी
वाणी से अमृत झरता है, अतिशय ज्ञान प्रभावी
जीवन है पानी की बूँद, गुरुवर संदेश सुनायें
गुरुवर के गुण गायें.....

अध्यात्म आगम को गुरुवर, चर्या से दिखलाते
उपसर्गों को हँसकर सहते, आगे बढ़ते जाते
शांति प्रभु के लघुनंदन, गुरुवर आप कहायें
गुरुवर के गुण गायें.....

भजन-74

तर्ज-मनमोहन कान्हा...

मेरे छोटे बाबा विनती करूँ दिन रैन-2
राह तके मेरे नैन.....2
अब तो दरश दे दो मेरे गुरुवर
मनवा है बैचेन।
मेरे.....

नेह की डोरी तुम संग जोड़ी,
हमसे तो नाही जायेगी तोड़ी।
हे रत्नाकर, हे गिरनारी
तनिक न आवे चैन,
राह.....

जनम-जनम से तुमको निहारूँ,
बोलो किस विध तुमको पुकारूँ
हे मुनिवर, दिव्य मूर्ति
राह न पावे चैन,
राह.....

चरणों की तरसी तड़पी आँखें,
अश्रुधारा चरण पखारे।
हे लघुनंदन, भवगती नंदन,
त्यागूँ सब सुख चैन,
राहे तके.....

धड़कन बिन दिल धड़के कैसे,
साँसे बिन तन जीया कैसे,
सहज हृदयी, हे संकट मोचन,
दुनिया बसेरा रैन,
राह तक मेरे नैन.....

भजन-75

तर्ज - सुन रे मेघा...

सुन रे मेघा राही गगन के जा तू मेरे गुरु के चरण में,
गुरुवर से कहियो दुःख मेरे मन के,
तन मन जीवन फूल सा, चाँदनी छायी रात,
जीवन में फिर भी अँधेरा है, कि डारा यहाँ विरह ने डेरा है।

सुन-सुन शीतल झौंके पवन के जा तू मेरे गुरुवर चरण में,
गुरुवर से कहियो दुःख मेरे मन के,
न हर्ष उमंगे न राह है, न कोई साज श्रृंगार
कि गुरु बिन कछु न सुहावे हो, कि गुरुवर थारी याद सतावे हो...

म्हारे गुरु के जैसी किसी की, संयम की लाली छायी न होगी-2
परम तपस्वी के जैसी किसी की, छवि कोई और बनाई न होगी-2
मेघा रे ऽऽऽ....
गुरु को ढूँढने में कोई कठिनाई न होगी,
जब तक तन में साँस है, तब तक मन में आस, ये पंछी कहीं उड़ ही न जायेरे..
हो गुरुवर! थारी याद सतावे रे...

घर-घर गलियाँ नगरी सूनी, सूखे वृक्ष पवन थमी सी।-2
गुरु से मिलन की प्यासी आँखे, विरह का वेदन अश्क भरी सी
पवन रे ऽऽऽ....

पलकें बिछाई गुरुवर आस में तेरी...
साँसें कहती हैं मेरी, जीवन तुम आधार, हृदय में गुरुवर आन विराजो रे..
हो गुरुवर! थारी याद सतावे रे...

विश्वास दिल में पद रज तेरी, इक दिन आत्म श्रृंगार करेगी।-2
माना कि देही से देह वियोगी, श्रद्धा समर्पण न तुमसे वियोगी। गुरुवरा ऽऽऽ...
जीवन निखारें गुरुवर, भक्ति से तेरी।
सुन्दर चरण तब तारण तरण, सुन्दर चरित्र महान् कि तीनों लोक चरण पखारे
हो गुरुवर थारी याद सतावे रे....
कि उन बिन कछु न सुहावे रे....
कि गुरू बिन कछु न सुहावे.....

भजन-76

तर्ज-वो रहने वाली महलों की...

तन जिसका है उज्ज्वल,
मन जिसका है कोमल
चेतन की चाहत में
बैठे पद्मासन में
वो चलने वाले सत्पथ पर
वो होने वाले तीर्थंकर
जय जय गुरुवर जय जय गुरुवर
जय जय गुरुवर विमर्श सागर

धारण करके संयम
वाणी बोले मधुरम
ध्यान में विराजे गुरुवर पद्मासन में
वो चलने वाले.....
वो होने वाले.....

मुश्किल सी है चर्या
प्रवचन की हो चर्चा
सदगुरु को ध्याये समाये प्रभु के आँगन में।
वो चलने वाले.....
वो होने वाले.....

अरिहन्तों के गुण गायें-जय हो
सिद्धों सा सुख पायें-जय हो
शान्तिबाबा को ध्याये, समाये तन मन में
वो चलने वाले.....
वो होने वाले तीर्थंकर....
जय जय गुरुवर जय जय गुरुवर
जय जय गुरुवर विमर्श सागर

भजन-77

गुरुवर तेरा द्वार पूजा है
तेरे बिना कौन मेरा दूजा यहाँ
ओ गुरुवर हो हो...
ओ भगवन् हो हो...
जबसे मैंने तेरी सूरत देखी है
लगता है भगवान की मूरत देखी है
श्रद्धा के ये फूल न बिखरे
भक्ति माला टूटे ना...
गुरुवर तेरा द्वार...
बनके पुजारिन तेरी जीवन जी जाऊँ
चरणों में अर्पण हर भव मैं कर जाऊँ
छूटे सारी दुनियाँ गुरुवर
साथ तुम्हारा छूटे ना...
गुरुवर तेरा द्वार...

भजन-78

तर्ज-ओह रे ताल मिले

ओ गुरुवर आन बसो मेरे मन में लगन लगी तुमसे है
नयनन में मूरत प्यारी गई है समाय...

जब से सूरत देखी है नयनन में छा गई-2
ममतामयी त्याग तपस्या की मूरत भा गई-2
दर्शन करने से गुरु के सभी कष्ट जायँ। गुरुवर...

जब से गुरु को देखा है मन में बड़ा हर्ष है-2
दुनिया में न्यारा प्यारा, गुरुवर विमर्श है-2
खिलते हैं फूल हजारों जब गुरु मुस्कुराय। गुरुवर...

सब भक्तों के होठों पर गुरुवर के गीत हैं-2
हर दिल में करें बसेरा, सबके मनमीत हैं-2
देना आशीष हमेशा, चरणों में आय। गुरुवर...

मंडल भक्तामर गुरु से विनती ये ही करे-2
ऐसा ही प्यार हमेशा हमको मिलता रहे-2
कृपा से गुरुवर जी की नये भजन गाय। गुरुवर...